Chapter 7

सप्तम अध्याय

=============

मुक्तक संग्रह एवं आख्यानक कविताएँ

मुक्तक काव्य से उस काव्य रूप का बोध होता है, जिसमें कथात्मक प्रबन्ध या विषयगत बहुत लम्बे निबन्ध की योजना नहीं होती. संस्कृत के आचार्यों ने अपने में पूर्ण पूर्वापर निरपेक्ष एक छन्दवाली रचनाओं को ही मुक्तक कहा है पर चूँकि अन्य निरपेक्ष एकाधिक छंदों वाली रचनायें भी अनिबद्ध या कथाहीन होती है, अतः उन सब को मुक्तादि कहकर प्रबन्ध की तरह मुक्तक काव्य को भी एक सामान्य काव्य रूप मान लिया गया है. [1] हिन्दी के विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में...

" मुक्तक में प्रबन्ध के समान रस की धारा नहीं रहती जिसमें कथा प्रसंग की परिस्थिति में अपने को भूला हुआ पाठक मग्न हो जाता है और हृदय में एक स्थायी भाव ग्रहण करता है. इसमें तो रस के ऐसे छींटे पड़ते हैं जिनसे हृदय कालिका थोड़ी देर के लिए खिल उठती है. यदि प्रबंध काव्य एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता. उसमें उत्तरोत्तर अनेक दृश्यों द्वारा संघटित पूर्ण जीवन का या उसके अंग का प्रदर्शन नहीं होता बल्कि कोई एक रमणीय दृश्य सहसा सामने ला दिया जाता है. " [2]

वीर काव्यों की कोटि में आने वाले इस युग के कतिपय प्रमुख संग्रह प्रकाश में आते हैं जिनमें वीर मुक्तक भी संग्रहीत हैं. यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इन संग्रहों की सभी रचनाएँ वीर रसात्मक नहीं है. अतः प्रस्तुत विवेचन में केवल उन्हीं रचनाओं पर विचार किया जाएगा जो हमारे प्रतिपाद्य से संबंधित हैं. हमारे अध्ययन की परिधि में आने वाले संग्रह इस प्रकार है ---

" रेणुका ; " इतिहास के आँसू ", " स्वदेश संगीत ", " मंगल घट ", " अनामिका ", शम्पा ", " प्रतिपदा ", " वीर सतसई ",

" मुकुल ", " हुंकार ", " भैरवी ", " पूजागीत ", " प्रभाती ", " हिमकिरीटिनी ", " प्रलय-सृजन ", " सामधेनी ", " बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ ", " बलिपथ के गीत ", " माता ", " चेतना ", " विश्वास बढ़ता ही गया ", " समर्पण ", " युगचरण ", " झण्डा ऊँचा रहे हमारा ", " परशुराम की प्रतीक्षा ", " लहर ", " परिमल ", विषयवस्तु के आधार पर उक्त रचनाओं को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं --

(क) सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं नव जागरण की चेतना से ग्रहीत

मुक्तक संग्रह :-- स्वदेश संगीत (सन् 1925), मंगल घट (सन् 1937), रेणुका (सन् 1935), अनामिका (सन् 1938), शम्पा (सन् 1943), इतिहास के आँसू (सन् 1951), प्रतिपदा (सन् 1960),

(ख) क्रान्ति, बलिदान, राष्ट्र एवं देश प्रेम की चेतना से ग्रहीत

मुक्तक संग्रह :- मुकुल (सन् 1930), हुँकार (सन् 1938), कुंकुम (सन् 1939), भैरवी (सन् 1941), पूजागीत (सन् 1942), हिमकिरीटनी (सन् 1942 ई0), प्रभाती (1944 ई0), बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ (सन् 1946), सामधेनी (सन् 1947), बलिपथ के गीत (सन् 1950), माता (सन् 1951), चेतना (सन् 1954), विश्वास बढ़ता ही गया (सन् 1955), समर्पण (सन् 1956), युगचरण (सन् 1956), परशुराम की प्रतीक्षा (सन् 1963), झंडा ऊँचा रहे हमारा (सन् 1978).

(ग) इतर रचनाएँ :- वीर सतसई (सन् 1927).

इसके अतिरिक्त पत्र पत्रिकाएँ हैं जिसमें भी ऐतिहासिक सामग्री बिखरी हुई है जिसे यहाँ विस्तार के भय से नहीं लिया जा रहा है. उपर्युक्त वर्गीकरण के अनुसार इन कृतियों पर क्रमशः विचार किया जा रहा है ।

(क) सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं नव जागरण की चेतना से ग्रहीत मुक्तक संग्रह

पूर्ववर्ती विवेचन में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, तिलक आदि नेताओं ने अपनी संस्कृति, धर्म और उज्ज्वल अतीत के प्रति गौरव भाव जगाकर नवीन जागरण का मंत्र फूँक दिया. भारतवर्ष अपनी सर्वांगीण, सम्पन्न तथा गौरवमयी संस्कृति के लिए संसार भर में विख्यात है. एक समय था जब यह देश जगद गुरु की उपाधि से विभूषित था कि प्रचुरता के कारण संसार इसे सोने की चिड़िया के नाम से सम्बोधित करता था. अंग्रेजों के आने से देश की विभूतियाँ तथा बहुमूल्य पदार्थ यहाँ से शनैः शनैः अदृश्य होने लगे. देश की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी. संभवतः आपत्तियों की सीमा टूट जाने के कारण वही उपचार बनकर देश के सम्मुख आई. अंग्रेजी साम्राज्य के आघात ने जहाँ देश का सर्वस्व लूट लिया, वहाँ भारतवासियों की चिर प्रगाढ़ निद्रा भी भंग हो गई. उन्हें जहाँ वर्तमान की अवनति पर विक्षोभ होने लगा वहाँ अतीत के प्रति गर्व के कारण अपना मस्तक ऊँचा करने के योग्य भी हो गये. वे वर्तमान से उदास और निराश थे परन्तु अतीत की हरीतिमा तथा उज्जवलता अब भी उनके आकर्षण का विषय थी. अतीत के आलोक में उन्हें आशा की किरण दिखाई देने लगी. वे उसी ओर मुड़े और अपना खोया हुआ बल, बुद्धि तथा ऐश्वर्य फिर से प्राप्त करने के लिए उत्सुक होने लगे. अतीत के गौरव ने उन्हें नवचेतना दी, प्रेरणा दी और उनमें पुनरुत्थान की एक उमंग जाग्रत

हुई. आधुनिक युग के निराला, मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह आदि कवियों ने नेताओं की भाँति वही कार्य अपनी कविताओं द्वारा सम्पन्न करने के लिए अथक परिश्रम किया.

स्वदेश संगीत एवं मंगल घट

मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 65 कविताओं का संग्रह " स्वदेश संगीत " संवत् 1982 में और " मंगल घट " का संवत् 1994 में प्रकाशन हुआ. स्वदेश संगीत की अनेक कविताओं का संग्रह होने से पूर्व पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी. विचार धारा की दृष्टि से ये कविताएँ " भारत भारती " की परम्परा में रखी जा सकती है. अतीत के गौरव का जागरण " स्वदेश संगीत " का उद्देश्य है. भारत भारती में युवक कवि गुप्त का ओजस्वी पौरुष है तो स्वदेश संगीत उसके प्रौढ़ विचारों का भंडार है, प्रथम में उग्र तारल्य है तो द्वितीय में शुचि सारल्य. इस संग्रह में शास्त्रवी कृत रसों में से किसी एक रस का प्राधान्य नहीं मिलता. इस संग्रह की प्रमुख वीर रस की कविताएँ " मातृभूमि ", " भारतवर्ष ", " बाजी प्रभु देश पाण्डे ", " मेरा देश " एवं " आर्य भार्या " आदि प्रमुख हैं ।

इसी प्रकार मंगलघट में भी भिन्न-2 विषयों पर लिखी 62 कविताएँ संग्रहीत हैं. इसमें गुप्तजी ने भारतवर्ष के भौगोलिक स्वरूप का गौरवगान किया है और विश्ववन्धा स्वर्गोपमा भारत भूमि को प्रशस्तियाँ भेंट करते हुए अपने देश प्रेम के उद्गारों को व्यक्त किया है. उपरनिर्दिष्ट " स्वदेश संगीत " की वीर रस की कविताएँ इसमें भी समाहित है. इनके अतिरिक्त" नकली किला ", " विकट भट " एवं " महाराजा पृथ्वीराज का पत्र " वीर रस की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं. बाद में " रंग में भंग " के नाम से प्रकाशित नकली किला तथा विकट भट आख्यानक काव्य है. अतः इनपर यथास्थान विचार किया जायगा. " महाराजा पृथ्वीराज

का पत्र " में कवि ने बड़ी ही ओजपूर्ण शैली में स्वतंत्रता के आह्वान की एक सरस कविता है.

" मातृभूमि " , " भारतवर्ष " एवं " मेरा देश " नामक रचनाओं में कवि ने अत्याधिक ओजपूर्ण शब्दों में अपनी मातृभूमि की विशेषताओं को बताते हुए नवयुवकों को उस पर बलिदान होने के लिए प्रेरित किया है. इसी प्रकार बाजी प्रभु देशपाण्डे " में देश पाण्डे के वीरत्व, उल्लास और ओज का वर्णन बड़ी ही निपुणता के साथ किया है तो " आर्य भार्या " में नारियों के कर्तव्य, उनकी वीरता को दर्शाने का सफल प्रयत्न किया है ।

निष्कर्षत: तो हम कह सकते हैं कि गुप्त जी की इन रचनाओं में वीरत्व देश पर बलि होने के लिए उत्साह और ओज भरा पड़ा है. इन दोनों संग्रहों में लगभग तीस वर्ष के दीर्घ अन्तराल की कविताओं के संकलन के कारण शिल्प की दृष्टि से पर्याप्त वैषम्य है. गुप्तजी वस्तुत: इतिवृत के कवि है.अतएव " मंगल घट " की वर्णन प्रधान कथात्मक रचनाएँ पर्याप्त रोचक, रसमय एवं कलापूर्ण हैं.

रेणुका

" रेणुका " राष्ट्रकवि दिनकर का पहला मुक्तक संग्रह है. इस संग्रह की कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर अधिक प्रमुख है. उन्तालीस कविताओं के इस संग्रह में पाँच प्रकार की कविताएँ हैं. प्रगतिवादी, राष्ट्रपरक, श्रृंगारिक, अध्यात्मपरक एवं प्रकृति सम्बन्धी. " रेणुका"का कवि इस विषमतापूर्ण और पीड़िता संसार में समता तथा सुख लाने का इच्छुक है. " रेणुका " संग्रह में वीर रस की कोटि में आने वाली " पाटलीपुत्र की गंगा ", " कस्मै देवाय ", " हिमालय ", " मिथिला ताण्डव " बोधिसत्व " आदि कविताएँ हैं. पाटलीपुत्र की गंगा से शीर्षक रचना

में कवि ने अतीत का गौरव गान किया है-

" तुझे याद है चढ़े पदों पर कितने जय सुमनों के हार ?
कितनी बार समुद्रगुप्त ने धोयी है तुझमें तलवार ?
तेरे तीरों पर दिग्विजयी नृप के कितने उड़े निशान ?
कितने चक्रवर्तियों ने हैं किये कूल पर अवभृथ स्नान ?
विजयी चन्द्रगुप्त के पद पर सैल्यूकस की वह मनुहार,
तुझे याद है देवि ! मगध का वह विराट उज्ज्वल श्रृंगार ?"[3]

" हिमालय ", " मिथिला " इत्यादि कविताओं में अतीत के प्रति मोह और वेदना है. देश की संस्कृति, वीरत्व एवं समृद्धि के अनेक जगमगाते चित्र " रेणुका " में परिलक्षित होते हैं. " कस्मै देवाय " में क्रांति की अनिवार्यता को प्रस्तुत किया है जो अत्यधिक ओजस्वी है--

" क्रान्ति धात्रि कविते ! जागे,उठ,अम्बर में आग लगा दे,
पतन,पाप,पाखंड जले जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे ।
उठ भूषण की भाव-रंगिणी ! लेनिन के दिल की चिनगारी
युग मर्दित यौवन की ज्वाला ! जाग जाग री क्रान्ति कुमारी "[4]

" हिमालय " शीर्षक कविता भी उस वीरत्व के आह्वान को लेकर है. राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए कवि गांधीवादी अहिंसक नीति के प्रति " हिमालय " शीर्षक कविता में अपना अविश्वास व्यक्त करते है ।[5]

" रेणुका " में संग्रहीत कविताओं के विषय यह उल्लेखनीय है कि इनमें उनकी परवर्ती रचनाओं के बीज निहित हैं. इसमें काव्य एवं जीवन के प्रति कवि के दृष्टिकोण, भारतीय संस्कृति एवं अतीत गौरव

के प्रति गहन आस्था तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का उद्घाटन हुआ है. इसमें एक ओर आग बरसाने वाली क्रांतिकारी रचनाएँ हैं तो दूसरी ओर कोमल अनुभूतियों से सिक्त सरस एवं हृदयग्राही रचनाएँ है.

अनामिका

पौरूष के ज्योतिपुंज निराला का यह " अनामिका " संग्रह सन् 1938 में प्रकाशित हुआ है. इसमें बंगाल साहित्य के रविन्द्रनाथ टैगोर एवं विवेकानंद का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है. इस संग्रह की कविताएँ दो भागों में विभक्त की जा सकती है. मौलिक एवं रूपांतरित . इस संग्रह में वीर रस के अतिरिक्त श्रृंगार का चित्रण भी मिलता है. जिनमें से " नाचे उस पार श्यामा ", " जेष्ठ ", " खण्डहर ", " दिल्ली " , " यही ", " रेखा ", रचनाएँ वीर रस की कोटि में रखी जा सकती है. " नाचे उस पार श्यामा " एवं " जेष्ठ " में कवि ने क्रांति द्वारा देश का आह्वान किया है. " खण्डहर ", " दिल्ली " यही " , " रेखा " आदि कविताओं के माध्यम से कवि निराला ने भारतीय संस्कृति की गरिमा का विराट रूप उपस्थित किया है जिससे चिर निंद्रा में मग्न भारतीय समुदाय अपने गौरवपूर्ण अतीत का पर्यावलोचन कर सके. वस्तुतः इन कविताओं के माध्यम से कवि निराला ने भारतीय स्वतंत्रता के सेनानियों को नवजागरण का संदेश दिया है. " खण्डहर " को भारतीय अतीत के रूप में प्रयुक्त कर कवि ने पंतजलि, व्यास , राम, कृष्ण, अर्जुन एवं भीमादि का स्मरण किया है. " दिल्ली " तो इतिहास की कटुतम अनुभूतियों के प्रतीक के रूप में चित्रित है. जिसने अपने जीवन में अनेक उत्थान पतन देखे हैं. दिल्ली की कल्पना मात्र से ही कवि के हृदय में कौतूहल की सरिता प्रवाहित हो जाती है--

" क्या यह वही देश है
भीमार्जुन आदि का कीर्ति क्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका- ब्रह्मचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में । " 6

शम्पा
====

सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित " शम्पा " डा० कुँवर चन्द्र प्रकाशसिंह की महत्वपूर्ण कृति है. कुल उन्तीस कविताओं का यह संग्रह कवि की ओजस्विता का परिणाम है. अधिकांश कविताएँ राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत हैं. राष्ट्र प्रेम प्रधान कुछ कविताओं में ओज से अधिक करुण रस का प्रतिपादन हुआ है और कवि वर्तमान से अधिक अतीत में आंकता प्रतीत होता है. परन्तु उनका अतीत जीवी कवि अतीत स्मृति में डूबकर ही नहीं रह गया है, वहाँ से ओज रूपी मोती तथा आदर्श पात्र रूपी मणि निकाल लाया है. अतीत की स्मृतियाँ उसके लिए साधन मात्र रही हैं. साध्य देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता ही रही है. " कपाल ", " विजया " रूपी शक्ति प्रतीकों तथा विभिन्न ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से कवि ने सोये हुए राष्ट्र को जगाने का कार्य किया है. कवि " पाटलीपुत्र ", " डाँडियाखेरा ", " हल्दीघाटी ", " अयोध्या " आदि स्थानों के ऐतिहासिक महत्व को प्रतिपादित करते हुए उनकी शौर्यपूर्ण स्मृतियों को जगाया है. कवि अपेक्षा करता जान पड़ता है कि भूतकालीन पथ प्रदर्शकों के जन्मदाता ये स्थान समसामायिक स्थिति के पथ प्रदर्शन में सहायक होंगे. क्षात्र धर्म के माध्यम से कवि ने सोयी भारतीय चेतना को जाग्रत किया है. कवि इसके साथ ही गौरव गाथा की याद दिलाता हुआ पराक्रमी घटनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करता है यथा--

" प्रबल यहाँ की नन्द-वाहिनी लख भय पाकर,
विफल मनोरथ लौट गया जग-जयी सिकन्दर ।
चन्द्रगुप्त का अतुल पराक्रम भूल न जाना,
ग्रीक शक्ति ने जिसे पराभव पा पहचाना
निज अशोक के विश्व विजय की अथक कहानी
कहा जिसको द्रवित गंगा का पानी ।

× × ×

उन तमारि विक्रम शकारि की गरुड़ पताका,
यहीं उड़ी थी, विश्व-विदित है जिनका साका । " 7

इसके साथ ही जब वह इन स्थानों से उचित उत्तर नहीं पाता तब उनको पुरानी यादों के सहारे कोसना आरंभ करता है कि शायद सोया हुआ अहं जागृत हो और देश के सपूत अपना कर्तव्य पहचानें. कवि पाटलीपुत्र पर खेद प्रकट करता है जिसने अशोक, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, छत्रसाल, मधुकर शाह तथा महाराज महेन्द्र जैसे योद्धा एवं भूषण जैसे कवियों को जन्म दिया. वही देश के लोग आज क्या से क्या हो गये हैं. वह अतीत के चित्रों एवं चरित्रों को साधन मानकर उनके माध्यम से सोये हुए राष्ट्र स्वर को मुखर करना चाहता है. स्वतंत्रता एवं मुक्ति प्राप्ति ही कवि का मुख्य लक्ष्य है. इसके साथ ही " छत्रसाल " शीर्षक कविता के छत्रसाल के समान यश प्राप्ति की कामना भी वह करता है और अपना कर्तव्य निभाते हुए वेणी माधव जैसे योद्धाओं को श्रद्धांजलि प्रस्तुत कर उनकी पूजा करता है. देशवासियों को " प्रताप " बनकर वह युवकों को मृत जाति जिलाने का संदेश देता है. इन महापुरुषों के प्रति कवि न केवल श्रद्धा के फूल ही अर्पित करता है अपितु उनके द्वारा राष्ट्र की धमनियों में जमे रक्त को पिघलाकर तरल आग भरना चाहता है. प्रत्येक दलित एवं शोषित जन

को उभारने का संदेश पहुँचाता सा कवि जान पड़ता है. " बन्दा बैरागी " के माध्यम से कवि दासता को वैराग्य के समरूप रखता है फिर प्रत्येक भारतीय को कर्म का संदेश देते हुए जाग्रत करना चाहता है ताकि वह वैराग्य और अकर्मण्यता को छोड़कर कर्मशील बन सकें. " विजया ", " करवाल " , " वीर बाहु " आदि रचनाओं में कवि कहता प्रतीत होता है कि जब तक लोग अपने बाहुबल की शक्ति को नहीं पहचानते तब तक स्वतंत्रता दूर है, अन्याय होता रहेगा. इसी बाहुबल ने अतीत में " दानवों ", " क्रूर शासकों " एवं " अत्याचारियों का दमन कर उन्हें नय की शिक्षा "[8] प्रदान की थी. कवि बाहुबल से अब भी ऐसी ही आशा करता है. " विजया " को पुकारता हुआ कवि कहता है कि तुम जिस प्रकार कभी " चिता ज्वाला "[9] कभी " वज्र घोर- हुकृति "[10] में " वाण की शिखा "[11] में कभी " पौरूष "[12] में जाग्रत होती रही हो उसी प्रकार सभी स्वतंत्रता के मतवालों के अंग-अंग में जागो. यथा-

" जागो जन-जन में,तन-तन में, नयनों में उल्का सी जागो,
उर-उर को विजड़ित तन्द्रा में भैरव-गर्जन भरती जागो । "[13]

प्रस्तुत संग्रह में संग्रहीत कविताओं का केन्द्र बिन्दु राष्ट्रीयता है. राष्ट्रीय जागरण के उद्देश्य से ही अधिकांश कविताओं का सृजन हुआ है. देश की पराधीनता उसे शूल की भाँति चुभती हैं, उसकी दासता की जंजीरों को तोड़ने के लिए वह हर संभव प्रयास करता है. इन कविताओं में अतीत के वातायन के वर्तमान की समस्याओं को देखने का सफल प्रयास हुआ है. इस संग्रह में कवि की वाणी की ओजस्विता तथा उसका अपराजेय पौरूष व्यक्त हुआ है ।

इतिहासके आँसू

कवि दिनकर की दस कविताओं का यह संग्रह सन् 1951 में प्रकाशित हुआ है. इन्हीं दिनों दिनकर पार्लियामेंट में आये थे. इनमें " मगध महिमा ", " अतीत के द्वार ", " पाटलीपुत्र की गंगा से " आदि वीर रस की रचनायें हैं. भारत विभाजन से उठी हुई समस्याएँ उनकी आँखों से प्राय: ओझल रहीं. राजनीति और धर्म की चक्की में पिसती हुई जनता का आक्रोश और दुःख वे निरपेक्ष एवं तटस्थ दृष्टि से देखते रहे, शायद इसका कारण यह था कि जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे अब तक गीत गाते आ रहे थे वह पूरा हो चुका था और जन, धन तथा सम्मान और मानवता का बड़े से बड़ा मूल्य भी उस सिद्धि की तुलना में न्यून था. अब दिनकर जनता के कवि नहीं उसके प्रतिनिधि मात्र थे. भारत के भाग्य विधायकों में से एक थे. विधायक नियम बनाता है, नीति निर्धारित करता है, भाग्य निर्माण करता है, जनता पर उसकी प्रतिक्रियाओं के प्रति वह बेखबर और बेपरवाह रहता है.

" इतिहास के आँसू " संकलन में " मगध- महिमा " के कुछ स्थलों को इस मोड़ की अभिव्यक्ति माना जा सकता है जहाँ पाकिस्तान की वैमनस्य नीति और काश्मीर समस्या का चित्रण भारत यूनान, चन्द्रगुप्त और सेल्यूकस के माध्यम से हुआ है. चन्द्रगुप्त की निम्नलिखित उक्तियाँ जवाहरलाल नेहरु और सरदार पटेल की दृढ़ घोषणाओं के अनुरूप हैं --

" नहीं चाहते किसी देश को हम निज दास बनाना,
पर स्वदेश का एक मनुज भी दास न कहीं रहेगा ।
हम चाहते सन्धि पर विग्रह कोई खड़ा करे तो,
उत्तर देगा उसे मगध का महा खड्ग बलशाली । " 14

" देह की लड़ाई देह से " का सिद्धान्त दिनकर यहाँ भी नहीं छोड़ सके हैं. स्वतंत्रता से पूर्व भारत विशाल साम्राज्यवादी शक्ति से जूझता रहा और उस युद्ध में विजय के तत्काल उपरान्त पाकिस्तान का अप्रत्याशित आक्रमण सामने आया. संभवतः इसीलिए कवि को चाणक्य के मुँह से कहलाना पड़ा ---

" आग के साथ आग बन मिलो, और पानी से बन पानी,
गरल का उत्तर है प्रतिगरल, यही कहते जग के ज्ञानी । " [15]

परन्तु हिंसा का राक्षस उनका साध्य यहाँ भी नहीं बना, चाणक्य की प्रतिशोध नीति को साधन के रूप में स्वीकार करते हुए भी उनका लक्ष्य अशोक की करुणा से दूर नहीं हुए. कवि के अनुसार राष्ट्रवाद स्वजनों रक्षा करता है परन्तु मानवतावाद, राष्ट्रप्रेम, देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण करके समस्त पृथ्वी को अपना बनाता है. राष्ट्रवाद की सरिता तटों की सीमा में बहती है, परन्तु मानवतावाद तट की सीमा का भंजन कर लहराने वाला अनंत सागर है. [16]

" अतीत के द्वार " के माध्यम से कवि प्राचीन वीरत्व, ओज की याद दिलाता हुआ जनता में उत्साह, वीरत्व भरने का प्रयत्न करता प्रतीत हो रहा है एवं " पाटलीपुत्र की गंगा " में भी विजयी चन्द्रगुप्त की वीरता का स्मरण करता हुआ सोए हुए वीरों में नवचेतना का संचार कर रहा है. [17] इस प्रकार " इतिहास के आँसू " में राजनैतिक सैद्धान्तिक व्याख्याएँ प्रस्तुत की गयी हैं. वास्तव में अतीत के माध्यम से व्यापक मानवता की स्थापना ही इस कृति का मूल दृश्य है ।

प्रतिपदा

सन् 1960 ई० में प्रकाशित कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह का यह संग्रह

समय-समय पर लिखी हुई पचहत्तर कविताओं का संग्रह है. निवेदन में कवि ने स्वीकार किया है " आरंभ की कुछ रचनाओं में इस देश के सांस्कृतिक मानदण्डों के पुण्य प्रतीकों की अभ्यर्थना है. " यंत्र और शक्कर मिल " जैसी रचनाओं में उन नवीन तत्वों के प्रति हमारे बढ़ते हुए रागात्मक सामंजस्य का निरूपण है, जो औद्योगिक सभ्यता के प्रचार और प्रसार के साथ- साथ हमारे जीवन और परिवेश के अनिवार्य अंग हो गये हैं. कुछ प्रेम और सौन्दर्य के गीत भी हैं और कुछ रचनाओं में प्रकृति के प्रति मेरी आत्मीयता की सहज अभिव्यक्ति है. " [18]

इन पचहत्तर कविताओं में " त्रिपथगा ", " हिमालय ", " महाशक्ति ", " महान प्रतिशोध ", " ईद का चाँद ", " हेमू अन्तिम विक्रमादित्य " ये छः कवितायें ही वीर रस की हैं जो अन्य रचनाओं की तुलना से बहुत ही कम है. " त्रिपथगा " एवं " हिमालय " में कवि क्रांति का आह्वान करता है और आशा करता है कि भारत के समस्त प्रदेश एक सूत्र में बँध जायें यथा ---

" जागे अंग, कलिंग, बंग सब उत्कल, मिथिला, राजस्थान,
जागे मगध, दशार्ण, चेदिका कौशल का पौरुष अम्लान [19]

" महाशक्ति " में दुर्गा की वीरता का वर्णन बड़े ही ओजस्वी स्वर में किया है. " महान प्रतिशोध " में महाभारत की पांचाली चीर हरण की कथा को लेकर भीम के ओज और प्रतिज्ञा का वर्णन है. मुक्तक कृति न होने के कारण इसका अनुशीलन इतर निबद्ध काव्य में अन्यत्र करेंगे. " ईद का चाँद " में कवि ने मानव संस्कृति को एक बताते हुए भारतवासियों में नवचेतना जागृत की है. " हेमू अन्तिम विक्रमादित्य " में हेमू के बाईस चुने हुए युद्धों का वर्णन है जिनमें हेमू के वीरत्व, साहस एवं ओज का ओजस्वी वर्णन है---

" फिर एक बार
वह चली काल विद्युत सी असि की प्रलय धार,
डूबी पठान प्रभुता जिसमें हो निराधार ।
झंझानिल से जिसके प्रहार पर पा प्रहार,
उड़ पीत-पत्र से गए यवन दल हुए क्षार ।
गर्वोन्नत इसलामी-शासन के शिर-स्त्राण
चरणों में नत हो लगे मांगने दया दान । " [20]

प्रस्तुत संग्रह में संग्रहीत कविताओं का केन्द्र बिन्दु राष्ट्रीयता, देश-प्रेम एवं सामाजिक विषमता है. देश की पराधीनता की कड़ियों को तोड़ने का हर प्रयत्न कवि ने किया है. इन रचनाओं में अतीत के वातायन से वर्तमान की समस्याओं को देखने का भी प्रयास हुआ है. इसकी वीर रस की कविताओं में साहस, ओज और पौरुष ही व्यक्त हुआ है.

निष्कर्षतः इन वीर रसात्मक रचनाओं में कवियों ने अतीत के माध्यम से वीरत्व का प्रतिपादन किया है एवं इसके साथ ही राष्ट्रीयता एवं देश भक्ति की भावना अपने चरम उत्कर्ष पर दृष्टिगोचर होती है. समग्र रूप से यह रचनायें सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय चेतना से प्रेरणा स्वरूप प्रकाश में आये हैं.

(आ) क्रान्ति, बलिदान, राष्ट्रप्रेम एवं देश प्रेम की चेतना से ग्रहीत मुक्तक काव्य

पूर्ववर्ती विवेचन में हम स्पष्ट कर चुके हैं कि उधर जब अंग्रेजी शासन का दमनचक्र वेगगति से चलने लगा और इधर देश में राजनैतिक चेतना बलवती होने लगी. जनता में राष्ट्र पर से दासता का जुआ उतार फेंकने की एक प्रबल उमंग जाग्रत हो चुकी थी. यह पथ देश भक्ति की अखण्ड

चेतना से परिव्याप्त हो रहे थे. युवक वर्ग कुछ विशेष उग्र रूप धारण कर रहा था और उसने इष्ट सिद्धि के लिए क्रांति का सहारा लिया. तत्का-लीन कवि भी अपनी लेखनी को इसी रंग में रंगने से रोक न सके. उनकी वाणी में भी उत्तेजना का स्वर मुखरित होने लगा. इसके अतिरिक्त वर्त-मान युग के कवियों में बलिदान का स्वर विशेष श्र रूप से उद्घोषित होता है. सरकार की ओर से दी जा रही यातनाएँ देशवासियों को संघर्ष से रोक न सकीं. गाँव-गाँव तथा नगर-नगर से आजादी के परवाने सिर पर कफ़न बाँधे झूमते झामते बलिपथ पर अग्रसर हो रहे थे. कैसा विचित्र त्याग है ? कैसा अनुपम बलिदान है ? धन्य है वे माँ के लाल, जिनकी भेंट जननी के श्रीचरणों में स्वीकार हो गयी. यही बलिदान की उमंग भी इस युग की कविताओं की विशेषता है. आत्मसमर्पण एवं क्रांति की भावना माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, शिवमंगलसिंह सुमन, श्यामलाल गुप्त पार्षद, मलखान सिंह सिसौदिया आदि की कविताओं में अभिव्यक्त हुई है जिसका वर्णन हम क्रमशः करेंगे ।

मुकुल

" मुकुल " सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रतिनिधि कविताओं का सन 1930 में प्रकाशित 39 कविताओं का संकलन है. कुछ एक रचनाओं में जीवन के प्रति सजग एवं दार्शनिक दृष्टिकोण झलकता है किंतु " झांसी की रानी ", से लेकर " पुरस्कार कैसा " तक की " झांसी की रानी ", " विजयादशमी ", " राखी की चुनौती ", " स्वदेश के प्रति ", " मातृ मंदिर ", " शस्त्र प्रहारी ", " वीरों का कैसा हो वसंत ", " लोकमान्य तिलक " आदि आठ वीर रस की कविताओं के उत्कृष्ट उदाहरण है. इन रचनाओं में लोक संप्रेषणीय भाषा एवं शैली में ओजस्विता के दर्शन होते हैं. कवयित्री ने ऐतिहासिक पीठिका के माध्यम से समसाम-यिक जनता को जागरूक करने की चेष्टा की है. विशेषतः नारी होने के

कारण उन्होंने अपने स्वर में मुख्यतः नारी-शक्ति का आह्वान किया है. देश की रमणियों को भी युवकों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का संदेश दिया है. वे रानी लक्ष्मीबाई में "दुर्गा " के दर्शन करती है जिसे " वीरता की अवतार " तक की संज्ञा देती हैं. रानी की दो सखियाँ " काना " और " मन्दरा " की स्वामिभक्ति के साथ-साथ देश प्यार को देखकर मन गद् गद् हो उठता है. बलिदान की भावना से आप्लावित " झाँसी की रानी " कविता की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं --

" रानी गयी सिधार, चिता बन उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी ।
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गयी हमको जो सीख सिखानी थी ।" 21

जलियाँवाला बाग में शहीद हुए उन शहीदों को भी कवयित्री ने श्रद्धांजलि अर्पण की हैं और वसन्त को निमंत्रण देती हुई कहती है कि यहाँ धीरे-धीरे आना क्योंकि यहाँ बूढ़े, जवान, बच्चे, नर-नारी सभी चिर निद्रा में लीन हैं. वह वायु को "मंद गति से चलने ", कोयल को " रोने का " राग गाने एवं भंवरे को " कष्ट की कथा " सुनाने के लिए कहती है. इस कविता को पढ़ने से करुण भाव उत्पन्न होता है किन्तु इसके साथ ही राष्ट्रप्रेम भी उमड़ता है. यह वह घटना है जिसके उपरान्त शहीद सरदार भगतसिंह यहाँ की रक्त सनी हुई मिट्टी बोतलों में बंद करके साथ ले गये थे और उसकी पूजा किया करते थे. सुभद्रा जी का भी इस करुण वाणी को मुखरित करने का अर्थ यही है कि इससे भावनात्मक जागृति उत्पन्न हो. इस कार्य में कवयित्री को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है और वह भी इसी कारण की इसका आधार राष्ट्र प्रेम है । 22

" विजया दशमी " कविता में कवयित्री ने नारियों के लिए बल, तेज का वरदान मांगा है और शारीरिक शक्ति के साथ आत्मिक बल की भी मांग की है--

" सबल पुरुष यदि भीरु बने, तो हमको दे वरदान सखी !
अबलायें उठ पड़े देश में, करें युद्ध घमसान सखी !
× × ×
दो विजये ! वह आत्मिक बल दो, वह हुंकार मचाने दो ।
अपनी निर्बल आवाजों से दुनियाँ को दहलाने दो । " [23]

श्रीमती चौहान ने जनता की मानसिकता को भांप कर तदनुसार ओज और वीर रस से परिपूर्ण राष्ट्रीयता के जागने का यत्न किया है. देश के सुप्त पुरुषों को नारियों के माध्यम से व्यंग्यपूर्ण शैली में जगाने का सफल प्रयास उनकी निम्न पंक्तियों में दिखाई देता है --

" तुम्हारे देश बन्धु यदि कभी डरे,कायर हो पीछे हटें,
बन्धु, दो बहनों का वरदान युद्ध में वे निर्भय मर मिटें । " [24]

कवयित्री स्थान- स्थान पर स्त्रियों की कुर्बानियों के माध्यम से पुरुष वर्ग को सचेत करती है और स्वयं भी सिंहनी के समान हर समय अपना शीश कटाने को तत्पर रहती है."राखी की चुनौती " कविता में राष्ट्र प्रेम का सहज उच्छलन दिखाई देता है. [25]

" स्वदेश के प्रति ", " मातृ मंदिरमें " आदि ऐसी कृतियाँ हैं जहाँ मातृभूमि के प्रति सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना है. वह कांग्रेस को मुक्ति का मार्ग समझती है. " शस्त्र प्रहरी " से " रार की रीति " सीखने को उत्सुक है. एक ओर वह अपने जागरण के कार्य में संलग्न है तो दूसरी ओर लोकमान्य के निधन पर भारत की शक्ति की एक कड़ी कम

होने का अनुभव करती हुई वहीं से सुदृढ़ शक्ति को अवतरित कराना चाहती है. कवयित्री अपनी काव्य रचना के लिए किसी प्रकार का पुरस्कार नहीं चाहती. " जननी " से प्रश्न करती है कि " झाँसी की रानी " को पुरस्कार कैसा और " सुभद्रा की कविता " की वहाँ क्या बिसात . " वीरों का कैसा हो वसंत " ही उसके सुझाव हैं.

कुल मिलाकर ये रचनाएँ सुभद्रा जी की वीर रस से सम्बन्धित कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत हैं. मातृभूमि की रक्षा के लिएवं युद्ध का दायित्व स्त्री वर्ग पर भी है ऐसा इस कृति की वीर रसीय रचनाओं को देखने पर ज्ञात पड़ता है. सरल,लोकगम्य भाषा एवं शैली में यह कृति बहुत सजीव हो उठी प्रतीत होती है ।

हुँकार

" रेणुका " के प्रकाशन के पश्चात दिनकर की वाणी नवजीवन का संदेश वहन कर हमारे राष्ट्रीय जीवन के सुख-दुःख को, रुदन-क्रंदन को अपने गान का विषय बनाने के लिए अधीर हो उठी थी. सन 1934 ई० के पश्चात भारतीय राजनीति में समाजवादी विचारों का प्रवेश विशेष रूप से अनुभव होने लगा. कांग्रेस समाजवादी दल का संगठन, कांग्रेस की शान्ति और वैधानिक प्रवृत्ति के विरुद्ध उठनेवाली तरुण राष्ट्र सेवकों की प्रतिक्रिया थी. देश को गांधी की अहिंसा ने जागृत तो अवश्य किया था किन्तु क्रांति का स्पष्ट रूप अभी तक निर्धारित नहीं हो पाया था. वर्तमान की विषमताओं से पीड़ित अब कवि का हृदय अनागत का गान गाने के लिए व्यग्र हो रहा था. दिनकर " हुंकार " में गत विभूति का गायक नहीं, आगत का स्वागत कर्ता, अनागत का स्वप्न देखने वाला और भावी युग का स्त्रष्टा कवि है. " हुंकार " का " आमुख " कवि के हृदय मंथन और उससे उत्पन्न अमृत

और विष की ओर संकेत करता है-

" रण की घड़ी जलन की बेला, तो मैं भी कुछ गाऊँगा ।
सुलग रही यदि शिखा यज्ञ की अपना हवन चढ़ाऊँगा । "[26]

युग देव का आह्वान करने के लिए कवि ने आरती के फूल सजाये हैं. प्रथम कविता " असमय आह्वान " है. जीवन में अमृत और विष दोनों हैं पर कवि के भाग्य में सुधा और मधु का भंडार है ही नहीं. वह वृन्तों के दीप, अम्बर के रत्न, लता, कदम की शोभा देखने तथा कोकिल के पंचम तान और पल्लवों के मर्मर गान को सुनने के लिए शायद बना ही नहीं. वह बीन के तार तोड़-मरोड़कर फेंक देता है और चांदी का ऊ शंख उठाकर भैरव हुंकार फूंकता है. [27]

" हुंकार " की कविताओं का दूसरा वर्ग उन राष्ट्रीय कविताओं का है जिनमें क्रांति और आक्रोश का स्वर प्रधान है. इनमें वीरत्व का सशक्त आह्वान है । उनकी वाणी को प्रलय का गर्जन देता है, जहाँ वह विद्रोह के गीत गाता हुआ तूफान का आह्वान करता है. परन्तु यह तूफान " रेणुका " के " ताण्डव " के समान केवल ध्वंस और नाश का ही संदेश नहीं देता. उसके पीछे एक राजनीतिक पृष्ठभूमि है, जनता के हृदय की ज्वाला है जो अत्याचार और अनाचार को चुनौती देती है. इस वर्ग की प्रतिनिधि कवितायें हैं -- " स्वर्ग दहन ", " आलोकधन्वा ", " चाह एक ", "दिगम्बरि " , " अनल किरीट ", " भीख और विपथगा "

" स्वर्ग दहन " और " आलोकधन्वा " शीर्षक रचनाएँ क्रांति युग के जाज्वल्यमान पौरुष तथा कवि के प्रबल आक्रोश से युक्त है. त्रस्त भारतीय जन मानस की करुणा को वाणी देने के लिए जब कवि अपनी काव्यवंशी में प्राण फूंकता है तो उसका स्वर करुण न रहकर रौद्र बन

जाता है, उसके शब्दों से क्रांति की लपटे छूटती है । [28]
" आलोकधन्वा " में क्रांतियुगीन युवा कवि की ज्वलन्त कहानी कही गयी है. इस कविता में एक ओर युग की चेतना और क्रांति के आलोक से प्रज्ज्वलित भारतीय जनमानस की कहानी है और दूसरी ओर क्रांति द्रष्टा दिनकर के ओज और आलोक की अभिव्यक्ति है. [29] " चाह एक " कविता में इन्हीं भावनाओं की आवृत्ति है. इन रचनाओं में व्यक्त ओजस्विता तथा क्रांति ज्वाला का आवाहन दिनकर को पूर्ववर्ती कवियों से बिलकुल पृथक करता है. कवि की भावनात्मक प्रखरता ने ही उनके स्वर को यह तीव्रता दी है. कवि क्रांति की उस उद्दाम लहर को देखने के लिए व्यग्र है जो उनकी दृष्टि में मुक्ति का एक मात्र मार्ग है । [30]

" अनल किरीट " कविता में स्वाधीनता प्रेमी, महत्वकांक्षी नवयुवकों को महानतम कष्ट सहन करने के लिए प्रस्तुत रहने की प्रेरणा दी गई है ---

" लेना अनल किरीट भाल पर ओ आशिक होने वाले !
कालकूट पहले पी लेना, सुधा बीज बोने वाले !
× × ×
अभय बैठ ज्वालामुखियों पर अपना मन्त्र जगाते हैं ।
ये हैं वे जिनके जादू पानी में आग लगाते हैं । " [31]

" सिपाही " शीर्षक कविता में एक सैनिक के मनोभावों को वाणी दी गई है. "वनिता की ममता न हुई सुत का न मुझे कुछ छोह हुआ " [32]

" भीख " शीर्षक कविता में शोषण, अनाचार, अत्याचार के प्रति कवि का प्रबल आक्रोश व्यक्त हुआ है. इसमें कवि भारतीय नवयुवकों के लिए तप्त रुधिर की भीख मांगता है जिससे वे समाज में क्रांति कर सकें.

" हुंकार " की मूल चेतना क्रान्ति की चेतना है. कवि क्रांति का स्पष्ट उद्घोष करता है और उसे एक नवीन नाम " विपथगा " प्रदान करता है जिसके आने जाने का कोई निश्चित मार्ग या स्थान नहीं. उसका " विपथगा " नाम सर्वथा उचित है । [33]

अतः निष्कर्ष यह है कि " हुंकार " में कवि के अन्तर्गत का विस्फोटक हुंकार व्यक्त होने के साथ ही उसकी विद्रोह भावना शतशः रूपों में प्रस्फुटित हुई है ।

कुंकुम
===

बालकृष्ण शर्मा " नवीन " के आदि काव्य ग्रंथ " कुंकुम " का प्रकाशन सन् 1939 ई० में हुआ है. इस संग्रह के प्रारंभ में कवि ने " कुछ बातें " नामक लम्बी भूमिका दी है. नागपुर साहित्य कवि सम्मेलन के सभापति पद से दिये गये अपने भाषण को, नवीन जी ने किंचित परिवर्तित रूप में, भूमिका के रूप में प्रस्तुत कर दिया है. [34] इस भूमिका में साहित्य के विषय में, स्वर्गीय नवीन जी के बुनियादी विचार संग्रहीत हैं. " कुंकुम " में 38 कविताओं को संग्रहीत किया गया है. अपनी परवर्ती रचनाओं के सदृश्य, इस कृति में " नवीन " जी ने कविताओं के लेखन- तिथि का उल्लेख यथास्थान नहीं किया है.इस संग्रह में देश भक्ति परक रचनाओं की प्रधानता है. इसकी प्रसिद्ध रचनायें " विप्लव गायन " एवं " पराजय गीत ", " शिखर पर " वीर रस परिपूर्ण रचनाओं के कारण काव्य की सुन्दरता में चार चांद लग गये हैं. " विप्लव-गायन " सन् 1921 के आंदोलन के समय लिखा गया हैं. वास्तव में इस रचना में क्रांतिकारी सूत्र तथा महात्मा गांधी की प्रेरणा एकत्रित हो गई है. नवीन जी ने स्वतः कहा है कि गांधीजी की प्रेरणा से ही यह " विप्लव- गायन " आया है. इसमें क्रांतिकारी कवि ने विध्वंस का संदेश सुनाया है. कवि का विश्वास है कि आज की व्यवस्था को मिटाये बिना शान्ति और

समता की स्थापना असंभव है. यथा--

" प्राणों के लाले पड़ जाएँ, त्राहि त्राहि रव नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का, धुआँधार जग में छा जाए,
बरसे आग, जलद जल जाएँ, भस्मसात भूधर हो जाएँ,
पाप- पुण्य सद्भावों की धूलि उड़ उठे दाएँ-बाएँ,
नभ का वक्षस्थल फट जाये, तारे टूक टूक हो जाएँ ।
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं जिससे उथल पुथल मच जाए । "[35]

आत्मसमर्पण की भावना नवीन जी कविताओं में ओजस्वी रूप में अभिव्यक्त हुई है. देश हित मर मिटनेवालों के अदम्य आवेग के सम्मुख मार्ग की विघ्न बाधाएँ कहाँ ठहर सकती हैं ' उन्हें तो तूफानों को लांघते हुए माता के पावन पद-पंकजों का स्पर्श अवश्य करना ही है. मातृमंदिर की नींव ऊँचे शिखर पर है. " नवीन " जी की " शिखर पर " शीर्षक कविता में बलिदान की एक ज्वलन्त उत्तेजना विद्यमान है--

" चढ़ चल, चढ़ चल, थक मत रे तू बलिदानों के पुंज,
देख कहीं न लुभावें तुझको जीवन की कुंज,
मधुर मृत्यु का नृत्य देख तू देने लग जा ताल
अपना सीस पिरो कर कर दे पूरी माँ की माल । "[36]

कवि ने सत्याग्रहियों के कारावास की कठिनाईयों का उल्लेख भी किया है और साथ ही जेल यात्रा करने वालों के दृढ़ संकल्प की सराहना की है जो सरकार की भीषण यातनाओं की चिन्ता न करते हुए अपने पथ से विचलित नहीं होते. अतः ऐसी कविताओं में कर्मवीर का पक्ष प्रकाश में आता है. नवीन जी ने सत्याग्रहियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए शासन की कठोरताओं तथा देशभक्तों के धैर्य एवं साहस को भावोत्तेजक वाणी में प्रस्तुत करते हैं-

" चला-चला कर अपनी चक्की स्वेद पोछना, रो प्यार,
उन कायर असुरों की घुड़की को सुन - सुन तू हंसना रे ।
× × ×
तू शकटार बना है पापी नंद वंश का जीवित काल ।
तेरी चक्की के थे गेहूँ पिसते हैं" पिस जाने दे,
चक्की पिसवाने वालों को मिट्टी में मिल जाने दें । "[37]

इस संग्रह की राष्ट्रीय कविताओं में कवि का आक्रोश ही मुख्यतः मुखरित हुआ है. इसमें सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन के उत्थान में योगदान करने वाले उन्नायकों के प्रति कवि की श्रद्धा भी व्यक्त हुई है ।

भैरवी
====

" भैरवी " सोहनलाल द्विवेदी की संकलनात्मक कृति है. संकलनात्मक प्रकृति के होने पर भी इसका केन्द्रीय स्वर एक है और वह है:राष्ट्रीय. कवि इस कृति के बारे में स्वयं कुछ नहीं कहना , जो कुछ कहना है वह ये कवितायें स्वयं आपसे कहेंगी । "[38]

यह कृति राष्ट्रीय इस माने में है कि यहाँ (भारत) राष्ट्र की भौगोलिक एकता और जनता की एकता के साथ-साथ उभयविध एकताओं को जीवंत रखनेवाली एक सूत्र में बांधने वाली सांस्कृतिक एकता की भैरवी भी गूंज रही है. प्रस्तुत कृति की संज्ञा भी इसीलिए सार्थक है । [39]

सोहनलाल द्विवेदी जी गांधीवादी कवि होने के साथ-साथ उन्होंने चिरस्मरणीय अतीत काल में अपने ओजपूर्ण तथा प्रेरक काव्यों द्वारा हिन्दी साहित्य की बड़ी सेवा की. इसी का प्रतिफल है कि भैरवी

में गांधीवादी चेतना से परिपूर्ण रचनाओं के साथ-साथ वीरत्व एवं उत्साह से परिपूर्ण रचनाओं की भी कमी नहीं है. " भैरवी " संग्रह में सैंतीस कवितायें संग्रहीत हैं जिनमें से " झोपड़ियों की ओर ", " दाण्डी यात्रा ", " त्रिपुरी कांग्रेस ", " राणा प्रताप ", " प्रयाण गीत ", " विप्लव गीत ", " आजादी के फूलों पर ", " सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी " , " जय राष्ट्रीय निशान ", आदि वीर रस की कोटि में रखी जा सकती हैं.

" झोपड़ियों की ओर " में कवि क्रांति का स्वर फूंकता हुआ दृष्टिगोचर होता है. किसान को कवि वीरों का बाहुदण्ड एवं योद्धाओं का प्राण कहता है. भारत के किसानों के द्वारा ही कवि स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता है. [40] " दांडी यात्रा " और " त्रिपुरी कांग्रेस " सजीव मार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत सुंदर रचना है. आलोच्य राष्ट्रीयता का स्थूल धरातल भौमिक एकता और उसके स्वातंत्र्य का है. परतंत्रता की संकरी सांकल में तड़पती हुई संवेदनशील कवि की अन्तरात्मा समूचे भारत का स्मरण करते हुए कह उठती है..

" है तेरा पांचाल प्रबल बंगाल विमल विक्रम वाला,
महाराष्ट्र सौराष्ट्र सिन्ध अपने प्रण पर मिटने वाला,
है बिहार गुण गौरव वाला उत्कल शक्ति संघ वाला,
बलि वाला गुजरात,सुदृढ़ मद्रास भक्ति वैभव वाला,
फिर क्यों दुर्बल भुजा हमारी कैसी कसी लोह लड़ियाँ ?
अंगड़ाई भर ले स्वदेश टूटें पल में कड़ियाँ-कड़ियाँ ।" [41]

इसी भावावेग की परंपरा में कवि कहीं " प्रयाण गीत " गाता है तो कहीं नवीन जी के विप्लव गायन के जोड़-तोड़ पर " विप्लव-गीत " गाता है. कवि ने स्वतंत्रता सेनानी " प्रताप " के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन में नवचेतना का संचार किया है और साथ ही बलि-

दान होने के लिए उद्यत होने वाली वीरता को जगाया है.

" हम कसे कवच सज अस्त्र-शस्त्र व्याकुल हैं रण में जाने को,
मेरे सेनापति कहाँ छिपे आओ तुम शंख बजाने को,
जागो ! प्रताप, मेवाड़ देश के लक्ष्य भेद हैं जगा रहे,
जागो ! प्रताप-माँ- बहनों के अपमान छेद हैं जगा रहे,
जागो प्रताप, मदवालों के मतवाले सेना सजा रहे,
जागो प्रताप, हल्दी घाटी में बैरी भेरी बजा रहे ! " [42]

वे तरुण तपस्वी " में जवाहर को भी भारतीयों के मन में ज्वाला बनकर धधकने के लिए प्रेरित करते हैं. " आजादी के फूलों पर " में कवि स्वदेश को क्रांति की लहर जगाने के लिए कहता है, ताकि माँ की कड़ियाँ पल भर में टूट सकें. कविवर द्विवेदी " माँ " शीर्षक कविता में वाणी की मुक्ति का ही नहीं, प्राणों का भी दान करने के लिए आंदोलनों की आग में कूदने वाले हैं--

" काराओं की हथकड़ियों को भी विजय कंकण की तरह धारण कर चुके है ।[43]

" सुना रहा हूँ तुम्हें भैरवी " में अतीत के माध्यम से कवि ने नवयुवकों में उत्साह संचार किया है. सुप्त भारतीयों के जनमानस में पौरुष का मंत्र फूंका है. [44] " विप्लव- गीत ", " जय जय जय " और " जय राष्ट्रीय निशान " सबल एवं स्फूर्ति दायिनी रचनायें है ये भी उत्साह ही जाग्रत करती हैं.

वास्तव में " भैरवी " की कवितायें भारतीय राष्ट्रीयता की व्यापक पृष्ठभूमि पर रची गयी हैं. उनमें सामयिकता है, आत्म संस्कार से अधिक प्रवृत्ति जागरण उनका लक्ष्य है. यह गांधीवादी विचारधारा का परिणाम है इसी कारण इसका " समर्पण " भी बापू के नाम है.

किन्तु गांधीवादी चेतना के अतिरिक्त उनकी राष्ट्रीय रचनाओं में बलिदान एवं क्रांति के आहवान के ओजस्वी स्वर वीर रस का सुंदर साक्ष्य उपस्थित करते हैं.

पूजागीत

" पूजा गीत " पंडित सोहनलाल द्विवेदी की राष्ट्रीय रचनाओं का संग्रह हैं. इस संग्रह में वीरता, आशा, ओज, साहस, दृढ़ता, बलिदान, उत्साह और आत्म सम्मान के बीच प्रस्फुटित हुई है. प्रचार से अधिक इसमें प्रकर्ष है. अन्य संग्रहों की अपेक्षा इसमें कवित्व और कलात्मकता अधिक है. इसका नाम भी मानों इसीका संकेत दे रहा है. " आज मैं किस ओर जाऊँ ", " आज है रण का निमंत्रण ", " आज तुम किस ओर " , " अब जागोगे किस उषा " आदि वीर रसात्मक कविताओं में मातृभूमि पर बलिदान होने की उमंग प्रस्तुत हुई है. कवि पराधीन देश की समस्या का एक मात्र हल बलिदान को ही मानता है--

" उधर दल-बल, सबल तोपें भर रही हुंकार,
इधर अर्पित प्राण की पड़ती न सुन झंकार,
....
इधर अत्याचार की है रक्तमय तलवार,
इधर जननी के चरण में जन्म शत बलिहार, " 45

द्विवेदी जी की कविताओं में आत्मोत्सर्ग का अपरिमेय साहस एवं संकल्प कूट-कूट कर भरा है. कवि की समस्त अनुभूतियाँ, कल्पनायें एवं अभिव्यंजनायें इसी प्रधान भावना से उद्वेलित प्रतीत होती हैं. मातृभूमि की पुकार पर अपना तन-मन-धन चढ़ा देने का उत्साह उनकी रचनाओं में दृष्टिगोचर होता है. 46 कवि की स्वदेशानुरागमयी कविताओं में भारत की आत्मा पुकारती हुई दृष्टिगोचर होती है, और भारत का यह कवि पराधीनता के शिकंजे से मुक्त होने के लिए

छटपटाता सा जान पड़ता है. कवि की आत्मा " अब जागोगे किस उषा " कविता में तरुणों को प्रबुद्ध करती हुई ललकार उठी है --

" नग्न तन, भय मग्न मन है, भग्न गृह प्रासाद आगे ।
उठो, फिर खँडहर सँवारो, प्राण तन मन जन्म वारो,
आज नव निर्माण में दो, दान जो भी देश मांगे । " 47

कवि अपनी कविताओं के द्वारा भारतीय जन जीवन में स्वदेशानुराग की चिनगारी फूँकता रहा, जन-जन को स्वदेश पर बलि होने के लिए प्रेरणा देता रहा और भारतीय तरुओं को आगे बढ़ने के लिए सतत उत्साह प्रदान करता रहा. " यह हठ और न ठानो " इसी चेतना की ओर संकेत करता है. इस संग्रह की सभी कवितायें राष्ट्र प्रेम की बलवती भावना से अनुप्राणित हैं किंतु वीर रस की कोटि में आने वाली इनी गिनी कविताएँ हैं जिन पर ऊपर विचार किया जा चुका है. इनकी सबसे बड़ी विशेषता है आशावादिता, जिससे उसके स्वर में ओज, उत्साह और दृढ़ता आ जाती है.

हिमकिरीटिनी

" हिमकिरीटिनी " माखनलाल चतुर्वेदी की प्रतिनिधि रचनाओं का संग्रह है. इसमें कवि की 1913 से लेकर 1940 तक की कवितायें संग्रहीत हैं. " आत्मनिवेदन " में कवि ने कहा है --

" सन् 1939 में जब त्रिपुरी कांग्रेस की तैयारी के समय जबलपुर में और फिर त्रिपुरी में रहा उसी समय में यह रचना अस्तित्व में आसी । " 48 इस संग्रह में कुल 44 कवितायें संग्रहीत है जिनमें मरण त्यौहार, सिपाही, विद्रोही, नाश का त्यौहार, तिलक, वीर-पूजा, जवानी , मरण ज्वार, सिपाहिनी और हिमकिरीटिनी

आदि वीर रस से संपुष्ट हैं. इसमें कांग्रेस की अहिंसात्मक नीति को स्पष्ट किया गया है और पूना के केसरी दल के माध्यम से देश को संदेश दिया गया है. [49] इस संग्रह में नारियों के बलिदान का उल्लेख भी है-

" एक से लग एक, हम जलती रहें, और बलि-बहने बढ़े,फलती रहें, [50]
सूर्य की किरनें कभी तो आयेंगी, जलन की घड़ियाँ,उन्हें ले आयेंगी.

" हिमकिरीटिनी " में कवि ने सम्पूर्ण भारत को एक कारागार के रूप में स्वीकार किया है जिससे मुक्ति के लिए कभी देश के यौवन को पुकारता है, कभी युगपुरुष को जगाता है और कभी मोहन रूपी मोहनदास गांधी को जनता का नेतृत्व करने के लिए आह्वान करता है. स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए शक्ति साधना का यही स्वरूप उस समय के लिए उपयुक्त था. बलि का मंत्रोच्चार उनकी राष्ट्रीय काव्य का मूल स्वर है,केन्द्रीय बिन्दु है. अपने देश को पराधीनता की लौह श्रृंखलाओं से विमुक्त करने की उसकी बलिवती भावना सर्वत्र व्यक्त हुई है वह बलिदान के लिए प्रस्तुत है--

" सूली का पथ ही सीखा हूँ,सुविधा सदा बचाता आया,
मैं बलि पथ का अंगारा हूँ,जीवन ज्वाल जलाता आया । "[51]

राष्ट्र के स्वाधीनता संग्राम में वह एक सिपाही के रूप में अपने जीवन का लक्ष्य बलिदान मानता है । [52]

" हिमकिरीटिनी " की उपर्युक्त वीर रस की कवितायें राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत हैं. इनकी भाषा इतनी ओजपूर्ण नहीं है बल्कि संदेश वाहिनी है. " तिलक " कविता में कवि ने ओजपूर्ण शैली का प्रयोग किया है. इस कृति की राष्ट्रीय प्रेम युक्त रचनाओं में वीर रस का रसात्मक परिपाक किन्तु बौद्धिक तथा चिन्तन युक्त राष्ट्रीयता का

विवेचन अधिक है ।

राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत वीर रस की कविताओं में " वीर पूजा ", " बन्धन सुख ", " निशस्त्र सेनानी ", " सिपाही ", " बलिपथी " एवं " जवानी " आदि प्रमुख हैं.

" जवानी " शीर्षक कविता में कवि ने जवानी को क्रांति का रूपक माना है. इसके साथ ही कवि नवयुवकों को देश पर बलिदान होने की प्रेरणा देता है :

" द्वार बलि का खोल, चल भूडोल कर दें,
एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दें,
मसल कर अपने इरादों सी उठाकर
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें ।
रक्त हैं या है नसों में क्षुद्र पानी '
जाँच कर तू सीस दे- देकर जवानी । " [53]

ब्रिटिश शासन की नीति के विरुद्ध कवि ने अपने भाव व्यक्त करते समय जिस शैली का प्रयोग किया है वह निर्भीकता की पराकाष्ठा है. [54] कवि के स्वर में ओज, उत्साह और दृढ़ता आ जाती है. इस संग्रह के विषय में कवि का आत्मकथ्य --

" साँस और सूझ जिस तरह एक दूसरे के विद्रोही नहीं, उसी तरह एक तरफ विश्व के प्रलयंकर और कोमल परिवर्तन तथा युग का निर्माण तथा दूसरी तरफ हृदयोन्मेष तथा विश्व के विकास के वैभवशील कौशल दोनों में कहीं विद्रोह नहीं दीख पड़ता क्योंकि एक कवि के रक्त की पहचान और सिर का दान माँगती है, और दूसरी वस्तु में समा सकने के कोमलतर क्षणों के उच्चतर समर्पण का सबूत चाहती है । [55]

प्रभाती

" प्रभाती " में सोहनलाल द्विवेदी की पैंतीस कवितायें संग्रहीत हैं. प्रभाती के ये गीत स्वर्णिम प्रभात के मधुर गीत हैं जिनमें कवि प्राय: यथार्थ की ओर उन्मुख है. कवि की चेतना पूर्व विवेचित संग्रहों की भाँति ही है. इस संग्रह की केवल " कोटि प्रणाम ", " प्रभाती ", " क्रान्ति " कवितायें ही वीर रस के उदाहरण हैं. अन्य रचनाओं का आधार गांधी जी कोही माना गया है. इसके अतिरिक्त " प्रेमचन्द " तथा रत्नाकर " पर भी कविता कर अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किए हैं. " कोटि प्रणाम " शीर्षक कविता द्वारा कवि बलिदान की प्रेरणा से उच्छवासित होने वाले संघर्ष के लिए उत्साह को सशक्त वाणी दी है-

" जंजीरों में कसे हुए सिंकचो के पार
जन्मभूमि जननी की करते जय जय कार ।
सही कठिन हथकड़ियों की बेतों की मार
आजादी की कभी न छोड़ी टेक पुकार ।।
. . . .
जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते हँसते शूली को लेते हैं चूम ।
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,
टेक न तजते पी जाते हैं विष का घूम । " 56

इन पंक्तियों में आन बान पर मर मिटने वाले भारतीय वीरों की गाथाओं को संकेतित करते हुए कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय में मर मिटने की चेतना जगायी है. अतीत के प्रति मोह और वेदना को भी द्विवेदी जी की राष्ट्रीय चेतना का प्रारंभिक रूप माना जा सकता है जो इसमें विद्यमान है. " प्रभाती " में इस पक्ष को और भी प्रकर्ष

मिला है--

" बोलो, वे द्रोणाचार्य कहाँ ? वह सूक्ष्म लक्ष्य संधान कहाँ ?
हैं कहाँ वीर अर्जुन मेरे गाँडीव कहाँ है ? वाण कहाँ ?
गीता गायक हैं कृष्ण कहाँ ? वह धीर धनुर्धर पार्थ कहाँ ?
है कुरुक्षेत्र वैसा ही पर वह शौर्य कहाँ ? पुरुषार्थ कहाँ ? " [57]

स्वतंत्रता के पुजारी प्रताप के माध्यम से भारतीय राजपूत वीरों को स्वतंत्रता के लिए बलिदान की प्रेरणा दी है. [58] तो " प्रभात फेरी " में भी स्वतंत्रता के लिए बलिदान होने की बलवती भावना दिखाई देती है. [59] कवि गांधी की अहिंसावादी विचारधारा का प्रबल समर्थक है. उसने अहिंसा का मानवीकरण करते हुए क्रांति की विभीषिका के मध्य अवतरित होने की बात कही है--

" महाक्रान्ति हुँकार लिए जब करती है नर- संहार,
रक्त धार में उतराने लगता समस्त संसार ,
सहम जाते हैं बुद्धि विचार, तभी मैं लेती हूँ अवतार ! " [60]

उपर्युक्त उक्ति में युद्धवीरता के स्थान पर कर्म या धर्मवीरता का पक्ष उद्घाटित हुआ है. इस संग्रह के विषय में कवि का स्वयं कथन है--

" ये समस्त रचनायें तो उस कवि के आवहान का मंत्र हैं, जो अपने गीत से अपने एक स्वर से वह प्राण फूंकेगा जिससे कोटि-कोटि भारतीयों के हृदय में स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की आग धधक उठेगी । " [61] अतः समग्रतया मूल्यांकन के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि वीरता और ओज की इनी गिनी रचनाओं के बावजूद भी इतर रचनाएँ अन्य प्रकार से राष्ट्रीय आन्दोलन के सन्दर्भ की कर्मवीरता को जगाने के लिए न्यूनाधिक रूप से सहायक कही जा सकती हैं ।

बंगाल के प्रति और अन्य कवितायें :- (सन् 1946 ई०)

" बंगाल के प्रति और अन्य कवितायें " मलखान सिंह " सिसौदिया " जी का प्रथम काव्य संग्रह है. इसके प्रकाशन के साथ ही कवि प्रगतिशील कवियों की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठित हो गये. यह संग्रह द्वितीय विश्वयुद्ध के समय लिखा गया है इसकी कविताओं में ओज एवं उत्साह है. " शोषित के नाते ", " मेरी अभिलाषा ", " देश-देश ने करवट बदली " वीर रसात्मक रचनाएँ हैं. सन् 1943-44 में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान फासिस्त और नाजी सेनाएँ यूरोप विजय करती हुई इंगलैण्ड एवं सोवियत संघ के साथ युद्ध में रत थीं. दूसरी ओर जापानी सेनाएँ स्याम बर्मा को रौंदती हुई बंगाल की सीमा पर आ चुकी थीं. " शोषित के नाते " कविता कवि ने अपनी बीमारी के समय लिखी है. बीमारी की स्थिति में भी कवि में उत्साह है और इसी उत्साह के बल पर ही वह बीमारी से लड़ लेता है यही साहस और उत्साह इनकी कविताओं में भी है.

" करो शत्रु का काम तमाम " में कवि जनता में उत्साह पैदा करता हुआ फासिस्तों से लड़ने का प्रस्ताव रखता है ताकि स्वतंत्रता प्राप्त की जा सके । [62] आगे कवि एकता पर बल देता हुआ कहता है कि एक साथ मिलकर प्रहार करने से स्वतंत्रता की प्राप्ति सरल हो जायेगी .[63] अस्वस्थता की दशा में भी कवि देश के नवयुवकों को स्वतंत्रता संग्राम में जूझते हुए देखकर इसमें अपनी लेखनी द्वारा आहुति डालने का प्रयास करता है. वह तब तक युद्ध गीत लिखने की कामना करता है जब तक दुश्मन समाप्त नहीं हो जाता यथा--

" सच्चे हथियारों की रण में होती है धार प्रखर
मेरी कलम नुकीली होगी दुश्मन की ही छाती पर
... .

" टेर रही है सीमा, आरी कलम,न मैं चुप रह पाऊँ ।
जब तक मिटे न दुश्मन तब तक युद्ध गीत लिखता जाऊँ । " 64

" मेरी अभिलाषा में भी कवि दुश्मन से लोहा अपनी कलम से ही लेना चाहता है. सिपाही युद्ध हथियारों से करता है तो कवि युद्ध में उत्साह एवं प्रेरणा अपनी वाणी एवं शब्दों द्वारा लोगों में भरना चाहता है. 65" देश देश ने करवट बदली " में कवि आजादी का अंतिम रण करने के लिए भारतवासियों को प्रेरणा देता है जिससे युग-युग से अत्याचार सहने वाली जनता में नवचेतना जाग्रत हो. प्रथम कृति होने के फलस्वरूप भी यह रचना अद्वितीय है. कवि की कलात्मकता का पता भी इसमें लग जाता है. इस संग्रह की इन न्यूनाधिक रचनाओं में वीरत्व के कर्मवीर का रूप ही दृष्टिगोचर होता है.

सामधेनी

" सामधेनी " दिनकर की सन 1941 से 1946 तक की रचनाओं का संग्रह है जिनमें से अनेक समकालीन राष्ट्रीय जीवन की पृष्ठभूमि पर रची गयीं इक्कीस कवितायें संग्रहीत हैं. आरंभ की कविताओं में विचारों की एक श्रृंखला दीख पड़ती है. यज्ञ में समिधा की आवश्यकता होती है. कवि ने भी भावी क्रांति यज्ञ की समिधा प्रस्तुत की है और इन कविताओं की समिधा द्वारा ही वह यज्ञाग्नि प्रज्ज्वलित की गयी है जिसका पुरोधा कवि स्वयं है. प्रथम गीत " अवचेतन कृति, अचेतन शिल्प " में कवि का दृष्टिकोण प्रस्तुत हुआ है. कवि ने अगले गीत में अपने को पुरोधा कवि कहा है, जो समिधाएँ जुटाकर यहाँ की आग सुलगाने का प्रयत्न कर रहा है. पर अभी तो इस समिधा से धुआं ही उठ रह रहा है, वह इस धुएँ को देखना नहीं चाहता. उसकी चेष्टा है कि वह इस धुएँ से ज्वाला के तीर छोड़कर अग्नि प्रज्ज्वलित करे--

" सुलगती नहीं यज्ञ की आग दिशा धूमिल, यजमान अधीर,
पुरोधा कवि कोई है यहाँ ' देश को दे ज्वाला का तीर ।"[66]

कवि अपने जीवन को भी उसी यज्ञ में जलाकर देश व्यापी अंधकारको दूर करने के लिए प्रयत्नशील है. इसके साथ ही वह देश के तम को अपनी हड्डी की मशाल जलाकर भी प्रकाश देना चाहता है. [67] मानव की कल्पना की जीभ में धार और उसके स्वप्न में तलवार होती है. उसे बुलबुला समझना ठीक नहीं. कवि की रागिनी, मधु की धार नहीं, तलवार की धार है. वह नये घर की नींव रखने आयी है और नव निर्माण के लिए फौलादी दीवार उठाती है. [68] वह मानव की संस्कृति का ह्रास देखकर दुःखी है. शौर्य की शिखा और धर्म का दीपक बुझ चुका है और कवि भी उसी दीप को अपने स्नेहदान से जलाना चाहता है । [69]

यह प्रथम गीत मानों एक प्रकार से " सामधेनी " में प्रस्फुटित कवि की वीरोत्तेजना भरी वाणी की सशक्त भूमिका है. अतः प्रकारान्तर से इसे वीर काव्य के अंतर्गत लिया जा सकता है जिसके अतिरिक्त " अतीत के द्वार ", " आग की भीख ", " फलेगी डालों में तलवार ", " जवानी का झण्डा ", " जवानियाँ ", " साथी ", रचनाएँ तो पूर्णतया वीर काव्य की कोटि की हैं.

" फलेगी डालों में तलवार " एवं " जवानी का झण्डा " शीर्षक कविताओं के माध्यम से भारतीय वीरों में उत्साह एवं वीरत्व ओजमयी भाषा में भरा है. इस व्यापक अंधकार को काटने के लिए कवि पौरुष पूर्ण व्यक्तियों का आह्वान अनेक कविताओं में करता है. [70] कवि के अनुसार मानव को भी क्रांतियज्ञ की ज्वाला में जलना होगा- इसलिए कि वह जगत को नवजीवन का प्रकाश दे सके. [71] " सामधेनी " की

महत्वपूर्ण कविताएँ मुख्यतः " आग की भीख ", " जवानियाँ " और " साथी " में पौरुष का वेग, क्रांति की ज्वाला और बलिदान की ओजस्विता पायी जाती है. ये कविताएँ " हुँकार " की धारा में बहती दीख पड़ती हैं. "आग की भीख " वीरो त्तेजना भरी कविता है जिसमें अंधकार के विनाश के लिए कवि ने ईश्वर से अंगार की याचना की है ---

" दाता पुकार मेरी, संदीप्ति को जिला दे,
बुझती हुई शिखा को संजीवनी पिला दे ।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ ।
चढ़ती जवानियों का श्रृंगार माँगता हूँ । " [72]

" जवानियाँ " शीर्षक कविता में जवानी की काव्यात्मक व्याख्या है. कवि की दृष्टि में जवानी वह है जिसमें सतत पौरुष की उद्दाम ज्वाला जलती रहे, जो अंध विश्वासों एवं गलत परम्पराओं का भंजन करने में समर्थ हो और जो सदा लहू में स्नान करती हो. अवसाद की कालिमामयी रात्रि को दूर करने में केवल प्रदीप्त जवानी ही समर्थ है.[73] " हुँकार " में कवि क्रांति को " विपथगा " के रूप में देखता है तो " सामधेनी " की लालक्रांति में वह काली, शिखा और भवानी का रूप देखता है. भारत की मिट्टी जब दहक रही हो, जंजीरों में कसी जवानी जब स्वाधीन होने के लिए तड़प रही हो, उस समय समता के समर्थकों को लाल क्रांति के पुजारियों से अलग देखकर कवि का दुःखी होना स्वाभाविक है. उसका विश्वास है कि स्वातंत्र्य यज्ञ में समिधा अर्पित करने पर इसी कुण्ड से क्रांति विधायनी भवानी का उद्भव होगा । [74]

इस प्रकार हम देखते हैं कि पूर्ववर्ती काल की कविताओं की भाँति इन वीरोल्लासभरी कविताओं में कवि का ओजस्वी और

क्रान्ति की ओर उन्मुख उद्घोष सुनायी पड़ता है. इसमें युगीनचेतना की श्वासें हैं और है बलिदान के लिए उद्दाम उत्साह. " वास्तव में " सामधेनी " में दिनकर ने क्रांति यज्ञ की समिधा चुन चुन कर जुटाई है जिससे वह दिव्य अग्नि प्रज्वलित हो सके जो राष्ट्र जीवन की गहन कालिमा को हटाने में समर्थ हो. इस संग्रह की वीरत्व की कोटि में आने वाली रचनाओं की संख्या यद्यपि कम है किंतु शेष कविताओं में भी राष्ट्रीयता के साथ-साथ ओज, वीरता एवं पौरुष का बीच-बीच में उच्छलन मिलता है.

बलिपथ के गीत (सन् 1950)

जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद का यह संग्रह राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति एवं वीरत्व से ओतप्रोत कविताओं का संग्रह है जिसमें सन् 1942 से लेकर सन् 1949 तक की चालीस कविताएँ संग्रहीत हैं. इस संग्रह के विषय में कवि ने स्वयं लिखा है... " इन पिछले सात वर्षों में संसार और मेरा देश अनेक विविध परिस्थितियों से गुजरा और स्वभावतः मेरे जीवन और हृदय पर भी उनका प्रभाव पड़ा. उस प्रभाव ने समय-समय पर जैसे वातावरणों का निर्माण किया तथा जिन अनुभूतियों, भावनाओं और वेदनाओं का सृजन किया, उनकी अभिव्यक्तियाँ अधिकांशतः मेरी इन कविताओं में व्यक्त हो उठी हैं. उन परिस्थितियों से मिलाकर इन कविताओं का मर्मस्पर्श सुविधापूर्वक किया जा सके, इसके लिए मैंने प्रत्येक कविता के नीचे उसका रचना काल का उल्लेख कर दिया है. ...... पिछले वर्षों में मेरे जीवन और विचारों को जिन संघर्षों और चिन्तन क्रांतियों में विनम्र किन्तु कुछ सक्रिय भाग लेना पड़ा, उनसे सम्बद्ध भावनाओं और कल्पनाओं ने मेरे हृदय को बरबस अभिभूत किया । " 75

इस संग्रह की 40 कविताओं में " बलिपथ पर ", " कैदी और क्रांति ", " दीपक का नवजीवन ", " अगस्त क्रांति का गीत ", " विद्रोही ", " विप्लव और विधान ", " तरुण के प्रति ", " शहीद की विधवा से " " राष्ट्र वीरों के स्वागत में ", " परतन्त्र भारत की आत्मग्लानि " आदि वीर रस की राष्ट्रीयता से ओतप्रोत रचनाएँ हैं.

" बलिपथ पर " शीर्षक रचना में कवि ने बलि की भावना को प्रधानता दी है. " कैदी और क्रांति " एवं " दीपक का नवजीवन " दोनों ही कविताएँ सन 42 की क्रांति के उपरान्त जेल में लिखी गयी हैं. जिनमें से प्रथम " कैदी और क्रांति " में सत्याग्रही कर्मवीर की महिमा एवं उसके बलिदान को ही दर्शाया है.

" विद्रोही ! खर्च हुए कितने,तुम आकर,केवल बन्दी बन,
वे अधर तुम्हारे पथ पर चल हैं चढ़ा रहे हँस-हँस जीवन,
देते हैं रक्त और मस्तक, फिर भी उनके यशगान छिपे ।

... .

दी विदा, तुम्हारी जय बोली, फिर, जूझ पड़े समरांगण में,
कर में सिर लेकर,वे लाखों,हैं मरण न्योतते क्षण-क्षण में । " 76

" दीपक का नवजीवन " में कवि बलिपथ का पथिक बनकर अपने अन्तर की चिनगारी को प्रखर बनाना चाहता है जिससे क्रांति की ज्वाला भड़क सके. " विद्रोही " शीर्षक रचना में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध क्षुब्ध होकर विरोध करना चाहता है तो " विप्लव और विधान " में भी कवि नवयुवकों को क्रांति करने का ही संदेश देता है. " तरुण के प्रति " शीर्षक रचना में कवि ने देश के गुरुतर भार को नवयुवकों के सुदृढ़ कंधों पर डाल कर क्रांति की अग्नि सुलगाना चाहता है इसके अतिरिक्त करोड़ो श्रमिकों को सत्ता दिलाना, लोक

संस्कृति को फिर से जीवित करना आदि कर्तव्यों की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित किया है ।

" राष्ट्र वीरों के स्वागत गान में " स्वतंत्रता संग्राम में हुए शहीद वीरों का गौरव गान किया है किन्तु इसे वीर मुक्तक नहीं कह सकते. यही बात " श्रद्धा- सुमन " खण्ड की कविताओं के विषय में कहीं जा सकती हैं , समग्रतया विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते हैं कि मिलिंद जी राष्ट्रीयता के पोषक कवि हैं इनकी कविताओं का केन्द्रीय भाव बलि भावना है जिनमें से अनेक में वीर रस की भी अभिव्यक्ति हुई है ।

माता
====

माखनलाल चतुर्वेदी जी का " माता " नामक यह संग्रह राष्ट्र प्रेम की रचनाओं से ओतप्रोत है जिनमें से कुछ वीर मुक्तक भी आते हैं. कवि इसकी भूमिका में स्वयं स्वीकार करता है... " इस संग्रह को हिन्दी जगत के सम्मुख रखते समय, मेरे मन में एक कष्ट है. इस बात को मुझे बीस वरस पहले व्यक्त कर देना चाहिए था किन्तु उन दिनों व्यक्त करता तो मेरा पिस्तौलों का परिवार मुझे क्षमा न करता, क्योंकि मेरी " कहास " दण्ड उन दिनों जाने किन- किन को भोगना पड़ता. आज भी मैं उसे पूरी तरह व्यक्त कर सकूँगा ' संदेह ही है. किन्तु जीवन के प्रभात में जो बात न कह पाया, युग के अंगारों भरे प्रभात में तो इस बात का कुछ संकेत देखूँ । " [77] इसके आगे भूमिका में ही राष्ट्रीय कविता लिखने का कारण बताते हुए उनका कथन है..

" मदनलाल ढींगरा, गोपीनाथ साहा, चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह और जाने कौन कौन सब मर लिए । हमने उनके मरण, अपने राष्ट्रीय सुख और मन के सुख के लिए वरण कर लिए । ...... जो

साहित्यकार सहता नहीं वह अच्छा लिख भी नहीं सकता । यदि स्वयं सुभद्रा पर बीती का गाढ़ा रंग न होता तो क्या उन रचनाओं के प्राणों तक कोई पहुँच पाता ? " [78]

इस संग्रह में " जयगीते ", " लार्ड सिंह ", " भारत के भावी विद्वान ", " दुर्गम पथ ", " सेनानी ", " राष्ट्रीय झण्डे की भेंट " वीर रस की रचनायें हैं. " जय गीते " में कवि लोकमान्य तिलक की गीता का रहस्य उदघाटित करता प्रतीत होता है तो सन 1917 के " मांटेग्यू " के वक्तव्य को पढ़कर भवानी दुर्गा को पुकारता है, ताकि वह प्रकट होकर अंग्रेज रूपी राक्षसों का मर्दन कर सके. [79] लार्डसिंह के माध्यम से कवि ने भारतीयों को राज्य भक्ति का उपदेश दिया है जिसमें वीर रस का अजस्त्र प्रवाह दिखाई देता है --

" सुनावें यो बिजली के वाक्य- शीश भूपालों के झुक जायें,
सृष्टि कट मरने से बच जाय शस्त्र चांडालों के रूक जायें,
पाप के पण्डे पावें दण्ड दंभ भर से दुनिया भर डर जाय,
भगीरथ मन की विनती भान स्फूर्ति की गंगा कुछ कर जाय । " [80]

" भारत के भावी " विद्वान को सम्बोधित करता हुआ, कवि देशवासियों में बाल-पाल और लाल के माध्यम से साहस भरता है और पश्चिम के अंग्रेजों को संभलने की चेतावनी देता है. [81] " दुर्गम पथ " में कवि " कायर " और " प्रतिशोध " दोनों ही भावनाओं को बुरा समझता है तो " सेनानी " में तरुणाई को जागृत करता हुआ अपनी आशावादी विचारधारा का प्रतिपादन करता है. " राष्ट्रीय झण्डे की भेंट " पर अहिंसा के आंदोलन की महत्ता का प्रतिपादन करता हुआ कवि सहिष्णु बलिदान के लिए प्रबल उत्साह को प्रकट करता है--

" सजा हुई, जंजीरे पहिनी दुर्बल था, पर वार हुए,

मिट्टी, मोट, चक्कियाँ, कोल्हू हँस-हँस कर स्वीकार हुए,
" मातृभूमि " मैं तेरी सूरत देख सभी सह जाऊँगा
देलें दण्ड, आर्य बालक हूँ मस्तक नहीं झुकाऊँगा । " 82

इस संग्रह की अधिकांश कविताओं की मूल चेतना वीर रस की उपरनिर्दिष्ट रचनाओं में उत्साह, ओज है और प्रमुखतः ये रचनाएँ कर्म एवं धर्मवीरता को ही न्यूनाधिक रूप में जगाती दृष्टिगोचर होती है.

चेतना

सन 1954 में प्रकाशित सोहनलाल द्विवेदी की कविताओं का यह संग्रह " चेतना " उनकी समग्र काव्य यात्रा की एक अद्वितीय उपलब्धि है. इस संग्रह की तीस उच्चकोटि की रचनायें हैं जिनका सृजनकाल स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर महात्मा गांधीजी की हत्या और उसके बाद के एक दो वर्ष का है. इस संग्रह की वीर रसात्मक रचनाएँ " जयकेतन " " तिरंग ध्वज ", " तरुणाई का तकाजा ", " तुझे शपथ है ", " स्वतंत्रता के पुण्य पर्व " आदि रचनाएँ वीर रस की हैं. इन कविताओं में मुक्ति प्राप्ति का उल्लास, बलिदान होने के लिए उत्साह एवं ओज है.

" जयकेतन ", " तिरंग ध्वज " में देश प्रेम के माध्यम से कवि स्फूर्ति एवं नवयुवकों में उत्साह जागृत करता है इसके साथ ही उसके नीचे " नव निर्माण " के स्वप्नों को पूरा करने की प्रतिज्ञा भी की गयी है. " तरुणाई का तकाजा " में कवि ने अन्याय और अत्याचार का सामना करने के लिए अहिंसा को कायरता माना है और भारतीय जनमानस में उत्साह भरता हुआ दृष्टिगोचर होता है --

" तरुणाई का आज तकाजा चुप रहना है पाप यहाँ !

जो जी में आवे न कह सके वही दुसह संताप यहाँ !!
तरुणाई का आज तकाजा जब जग भय से मौन रहे
शीश हथेली पर ले करके खुलकर खेलें सत्य कहें !

× × ×

तरुणाई का आज तकाजा मृत्यु मिले या जीवन हो
कायरता से किन्तु कलंकित कभी न अपना यौवन हो ।। "[83]

" तुझे शपत है " में कवि ने देशभक्त वीरों को देश भक्ति एवं देश में हो रहे अत्याचार की याद दिलाते हुए बलिदान होने के लिए उत्साहित किया है--

" तुझे शपत है आजादी की, ओ जाँबाज जवाँ मेरे !
बुझा आग बरबादी की, जो है तेरे घर को घेरे !
तुझे शपत है, दृश्य देख मत जननी की बरबादी का,
पहले अपना काट शीश, फिर काट शीश आजादी का ! "[84]

और " सावधान " में सेनानी को शक्ति की महत्ता दर्शाता हुआ दृष्टिगोचर होता है. [85] " विजय पर्व " और " स्वतंत्रता के पुण्यपर्व " में बलिदान की भावना के माध्यम से नवीन चेतना जगाता है । [86]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि " चेतना " की मूल चेतना गांधीवादी होने के फलस्वरूप भी जो उपरनिर्दिष्ट न्यूनाधिक रचनायें, वीर रस की कोटि में आती हैं, वीर रस के पूर्ववर्ती विवेचन में दिखाए गये भेदों में से कर्मवीरता को ही दर्शाने का सफल प्रयास करती हैं.

विश्वास बढ़ता ही गया

शिवमंगल सिंह " सुमन " की 25 कविताओं का यह संकलन है.

इन कविताओं में मुख्यतः कवि का संघर्षशील जीवन, उसका अडिग विश्वास, साहस तथा वीरत्व व्यक्त हुआ है. सुमन जी ने इन कविताओं में किसी वाद विशेष का सहारा नहीं लिया है किन्तु हर क्रिया की प्रतिक्रिया बड़े मार्मिक ढंग से की है. उत्साह एवं विश्वास उनके वीरत्व के मूल परिमाप हैं. कवि हर रुकावट को " छोटे-मोटे आघात कहता हुआ स्थिति से न हारने की बात करता है. वह जब तक सांस है कर्मण्य करने का मार्ग प्रस्तुत करता है. कवि के शब्दों में ही--

" जब तक हाथ पैर चलते हैं जब तक वाणी बोल रही है,
अथ-इतिहीन कर्ममय पथ पर भार नहीं बन सकता जीवन ।"[87]

स्थिरता को मरण स्वरूप समझता हुआ कवि अपने जीवन को बहता हुआ बताता है. उनके अनुसार जीवन का प्रवाह बीते पथ की कथा नहीं दोहराता.[88] स्वयं को नये समय का यात्री कहता हुआ कवि " कंटा कीर्ण राह " के " अडिग चरणों " के नीचे रौंदने की बात कहता है. नदियों और झरनों के वेग के सम्मुख खड़ा होकर उनकी धारा का रुख मोड़ने का संकेत करता है.[89] अन्ततः कवि कहता है कि जीवन होने से आपत्तियों को झेलना अभ्यास बन जाता है और कितनी ही असुविधाओं एवं संकटों में भी वह बढ़ता ही जाता है. मृगतृष्णा एवं चातक के उदाहरणों से कवि इसी दर्शन को प्रमाणित करता है. वह इसी विश्वास के सहारे समसामयिक समस्याओं का हल ढूंढना चाहता है. स्वतंत्रता की प्राप्ति एक मात्र लक्ष्य समझकर कवि त्याग, बलिदान की महिमा का गान करता है. उसका स्वर विदेशी शासन के प्रति आक्रोशपूर्ण हो उठता है और वह राष्ट्र का शोषण करने वाले अंग्रेजों को उनकी करनी का फल देने की भीषण प्रतिज्ञा करता है.[90] भारतवासियों में नवजागरण का मंत्र फूंकता हुआ वह साम्राज्यवाद को नष्ट करने की प्रेरणा देता है ।

" उठो-उठो मेरे शिव ताण्डव नृत्य करो कुहराम मचा दो
कंकालों की नींव पर खड़े विश्व साम्राज्यवाद की ईंट से ईंट
बजा दो । "[91]

कवि प्राणों में उठते हुए ज्वार की बात करता है. वह प्राणों की बाजी लगाकर गोली का उत्तर गोली से देने के लिए तत्पर है.[92] " चौरी-चौरा " में हुए जनता के आक्रोश का वर्णन कवि ने बड़ी ही सजीवता से प्रस्तुत किया है. यथा..

" नई जवानी आई घर-घर बालक बूढ़े,युवा-नारि-नर
छाती खोले खड़े गोलियाँ खाने को मिटने को तत्पर ।
स्वतंत्रता की आई बेला-गली-गली में,डगर-डगर में
लिए हथेली पर सिर आगे बढ़ा शहीदों का जब मेला ।"[93]

स्वतंत्रता की चिनगारी को सदा प्रज्ज्वलित रखने का दायित्व स्वतंत्रता की चिनगारी देश के नवयुवकों पर रखता हुआ कवि उन्हें सदा सजग रहने की प्रेरणा देता है एवं " आज देश की मिट्टी बोल रही है ", " नई आग है, नई आग है " आदि रचनाओं में उत्साह को ही महत्व देता है. सम्पूर्ण रूप से देखा जाय तो जीवनास्था से पूर्ण " सुमन " जी का यह संग्रह वीरत्व की दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण है. इसमें राष्ट्रीय चेतना की अजस्त्र धारा वीरत्व तथा ओजपूर्ण उत्साह के साथ प्रवाहित हुई है.

<u>समर्पण</u>   माखनलाल चतुर्वेदी

" समर्पण " चतुर्वेदी जी की वीर रस से ओतप्रोत राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है. इसमें कुल 55 कविताओं का **संग्रह हैं**. जिनमें से " लाल टीका ", " युग ध्वनि ", " पर्वत की अभिलाषा " आदि वीर रस की रचनाएँ हैं. पराधीनता की अवस्था में आत्म विश्वास को सतत जाग्रत रखना आवश्यक है, अन्यथा उसकी उष्मा

मंद पड सकती है. स्वतंत्रता से पूर्व भारतीयों की भी यही स्थिति थी. इसी स्थिति से उबारने का प्रयास माखनलाल जी ने किया है. कवि के अनुसार घुटन भरी और बुझी हुई जिंदगी किशोरों और तरुणों के लिए नहीं है- अकर्मण्यों के लिए है. उसने सुसुप्तों को जगाने का कार्य किशोरों को सौंपा है यथा---

" ओ बेमूछों के बलिपन्थी ! आ इस घर में आग लगा दे
ठोकर देकर कह,युग ! चलता चल,युग के सर चढ़ तू चलता चल "[94]

" लाल टीका " , " युग ध्वनि " में भी कवि जागृति का ही संदेश देता है । [95]

यह हम लक्ष्य कर चुके हैं कि चतुर्वेदीजी के काव्य में स्थान-2 पर बलिदान के महत्व को स्वीकारने की प्रवृत्ति मिलती है. " पर्वत की अभिलाषा " शीर्षक कविता में " एक फूल की चाह " नामक लोक प्रसिद्ध कविता की भाँति उक्त आत्मोत्सर्ग की भावना व्यक्त हुई है. स्वाधीनता और स्वतंत्रता चतुर्वेदी जी के जीवन का प्रधान उद्देश्य रहा है. व्यक्ति जागरण तथा स्वतंत्रता बोध के लिए कवि की लेखनी सतत प्रयत्नशील रही है और इसके लिए अभिव्यक्ति के माध्यम में भले अन्तर आया हो, पर उसकी केन्द्रीय भावधारा समान रही है । कृष्ण के माध्यम से उन्होंने भारतीयों को जागृत किया है. " काली रातों का संदेश " यद्यपि कृष्ण के लिए है, पर यह कृष्ण स्वतंत्रता में भाग लेने वाले व्यक्ति ही हैं--

" अरे कंस के बंदीगृह की उन्मादक किलकार
तीस करोड़ बंदियों का भी खुल जाने दे द्वार । " [96]

इस संग्रह की कविताओं में उत्साह ही नहीं ओज भी है यथा---

" आज आंखों का नशा चढ़-चढ़, भुजा पर बोलता है,
और अमरों की अखण्ड वसुन्धरा पर डोलता है ।
x x x
प्राण देकर, प्राण लेकर, प्राण का खिलवाड़ सीखें,
हम अपाहिज है न, जो मांगे जगत से और भखें । " 97

समग्र रूप से यदि दृष्टि डाली जाये तो कवि के इस संग्रह में बलि भावना, उत्साह, देशप्रेम दृष्टिगोचर होता है. वीर रस के रूप में युद्धवीर का वर्णन न होकर कर्मऔर धर्मवीर को ही उभारने का सफल प्रयास है ।

युग चरण (माखनलाल चतुर्वेदी)

" युग चरण " कवि की उन्नतालीस कविताओं का संग्रह है. इसमें कवि युग की चेतना को प्रस्तुत करने में सफल रहा है. इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ जेल में लिखी गयी हैं. बिलासपुर जेल में सन 1921 में चतुर्वेदी जी को बांटने के लिए सन का ढेर दिया गया. ढेर से सन अलग करते हुए चतुर्वेदीजी को देखकर जेल अधिकारी ने उनसे कहा, " ढेरा लेकर ही माने " उसके इस वाक्य की प्रतिक्रिया इन शब्दों में प्रकट हुई.. " ढेरा मत बोलो, यह मेरा व्रत पूजन है सन नहीं, तन भारतीयों से मिलाता हूँ. चक्कर लगाते हुए अलख जगाता हूँ यों विश्व बांधने को प्रेम बंधन नाम ही को पाता हूँ. बिलासपुर वासियों में तो तीर्थराज इन सींखयों में पाता हूँ ।
स्वेद की कलिन्दजा में मस्ती की सरस्वती ले नयनों की गंगा वहा त्रिवेणी बहाता हूँ । 98

उपर्युक्त कथन में कर्मोत्साह का स्वर प्रस्फुटित हुआ है. इन उन्नतालीस कविताओं में " पुष्प की अभिलाषा ", " सेनानी ", " बंग जननी " आदि इनी गिनी वीर रस की कविताये हैं.

चतुर्वेदी जी के बन्दी जीवन का काव्य वास्तव में एक सशक्त व्यक्तित्व का समर्पण काव्य है. उनकी सुप्रसिद्ध कविता " पुष्प की अभिलाषा " भी जेल में ही लिखी गयी है. कई दशकों तक यह लघु काव्य कृति देश के महान क्रांतिकारियों का मूल मंत्र बनी रही. कार्यशीलता पर विश्वास रखने वाले कवि ने अपनी कविता में कर्म कोही ध्येय बनाया, कर्म का ही संदेश सुनाया. कर्म पर ही बलिदान को ही जीवन की प्रेरणा बना ली. " पुष्प की अभिलाषा " में देश भक्ति की प्रेरणा एक नवीन एवं प्रभावोत्पादक परिस्थियों में दी गयी है. मातृ-भूमि पर मर मिटने का आह्वान भाव परक उत्साह ही नहीं है एक बौद्धिक तथा तर्क संगत कर्तव्य प्रेरणा भी है. स्वतंत्रता संग्राम के लिए जो एक सैनिक अनुशासन की आवश्यकता होती है, उसे " सेनानी " शीर्षक कवितामें उपस्थित किया गया है. कवि के अनुसार रण का वाद्य बजने पर उत्सर्ग के लिए तैयार रहना ही सानानी का कर्तव्य है. [99] बलिदान वादी चेतना के प्राबल्य के कारण संभवतः देश के स्वाधीन हो जाने के उपरान्त भी कवि यही कहता है--

" मिले रक्त से रक्त, मने अपना त्योहार सलोना ।
भरा रहे अपनी बलि से माँ की पूजा का दोना ।
हथकड़ियों वाले हाथों हैं, शत-शत बन्दन वारें,
और चूड़ियों की कलाइयाँ उठ आरती उतारें । " [100]

" बंग जननी " आजादी के पहले की रचना है इसमें वीर पूजा का स्वर है. इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक भूमिका को लेकर कवि भविष्य में मार्ग तैयार करने का निर्देशन करता है । कवि कह उठता है..

" मैंने बंकिम दिया कि खनक उठी हथकड़ियाँ,
माँ बन्दिनी का गीत बना जागृति की घड़ियाँ ।
....

छोटे- छोटे लड़के लिए हथेली पर सिर अपने
उनसे, उस दिन, विश्व बली शासन डोला था !
ले मुट्ठी में शपत हाथ में गीता लेकर,
बना स्वर्ग सीढ़ी कि झूल जाते शूली पर । " [101]

उक्त विवरण से प्रकट है कि इस संग्रह की वीर रस की कविताओं में कवि का स्वर परतंत्रता की घुटन में गूंजा है इसलिए कवि मुखर ओजस्विता का प्रतिपादन न करता हुआ वैचारिक क्रांति का स्वर प्रस्तुत करता है. वह एक ऐसी भावना को जागृत करता है जिसमें जन-जन को कर्तव्य का बोध और कर्तव्य से प्रेरित व्यक्ति आत्म बलिदान मार्ग में कर्मवीर की भाँति सोत्साह गतिशील होता रहे ।

परशुराम की प्रतीक्षा : रामधारी सिंह दिनकर

" परशुराम की प्रतीक्षा " दिनकर जी की 18 प्रतिनिधि कविताओं का संग्रह है जो सन 1963 ई0 में प्रकाशित हुआ है. इस संग्रह की अधिकांश कविताओं की मूल चेतना भारत पर चीनी आक्रमण से संबंधित है. " परशुराम की प्रतीक्षा " शीर्षक कविता चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी एक सशक्त रचना है. इस संग्रह की " जवानियाँ ", " जवानी का झण्डा ", " समर शेष है " शीर्षक पूर्ववर्ती काल की रचनाओं के अतिरिक्त शेष सभी चीनी आक्रमण के समय की हैं. इस संग्रह में कवि ने सोये हुए सिंहों को जगाने के लिए शंखनाद किया है. " परशुराम की प्रतीक्षा ", " जवानियाँ " , " हिम्मत और रोशनी ", " जनता जगी हुई है ", " आज कसौटी पर गाँधी की आग है "; " जौहर ", " आपद्धर्म " एवं " जवानी का झण्डा " वीर रस के उत्कृष्ट उदाहरण हैं. इनमें " परशुराम की प्रतीक्षा " मुक्तक कृति न होने के कारण इसका अनुशीलन हम आख्यानक कविताओं के साथ अन्यत्र करेंगे. " जवानी का झण्डा " एवं " जवानियाँ " का

अनुशीलन हम पीछे कर चुके हैं. अतः प्रस्तुत विवेचन में केवल " हिम्मत की रोशनी ", " जनता जगी हुई है ", " आज कसौटी पर गांधी की आग है ", " जौहर " तथा " आपद्धर्म " शीर्षक रचनाओं का अनुशीलन शेष बचता है ।

" जनता जगी हुई है " , " आपद्धर्म " तथा " आज कसौटी पर गांधी की आग है " शीर्षक कविताओं में शांति एवं संघर्ष के वैचारिक द्वन्द्व को कवि ने " कुरुक्षेत्र " आदि रचनाओं की भाँति ही प्रस्तुत किया है और युद्ध की आवश्यकता पर बल दिया है. अहिंसा के संदर्भ में आक्रमणकारी शत्रु को मार भगाने का आह्वान एक प्रकार से राष्ट्र का आपद्धर्म है और इस आपद्धर्म की घड़ियों में विदेशी आक्रमण से उत्पन्न जन जागृति को उसने " जनता जगी हुई " कविता में मुखरित किया है. " आपद्धर्म " में इस चेतना को जगाने का प्रयास है और तीसरी कविता में गांधी जी के सिद्धान्त को नये परिवेश में व्याख्यायित करने का प्रयास है. ये तीनों ही कविताएँ युद्धोत्साह एवं कर्तव्य प्रेरणा के भावों से ओतप्रोत हैं. कवि प्रतिशोध की भावना को जगाना चाहता है यह सारा जागरण देश की जनता और प्रधान मंत्री पंडित नेहरु की चीनी की मैत्री विषयक भ्रम की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप आया है. " उर्वशी " का कवि इन रचनाओं के माध्यम से अपनी पूर्ववर्ती युद्ध, उत्साह एवं ओज की चेतना से पुनः जुड़ा हुआ दिखाई पड़ता है. इन सभी कविताओं में दिनकर शत्रु के मान मर्दन और शस्त्र संचालन के कृत्य को अधिक महत्व देते हैं.

उपर्युक्त विवेचन से प्रकट है कि अपनी मूल चेतना की भूमि पर कवि का प्रत्यागमन समसामयिक परिस्थितियों की देन है. " जौहर " शीर्षक कविता भी ऐसी चेतना की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसमें चीनी आक्रमण के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया, उत्तेजना तथा भारतीय सेना की

आरंभिक पराजयों से उत्पन्न अवसाद के चित्र स्थापित हुए हैं. किन्तु ये अवसाद भी वीरता और बलिदान का ही समर्थन करता है ।

वीर रस की कोटि में न आने वाली पूर्ववर्ती काल की रचनाएँ " समर शेष है ", " लोहे के मर्द " शीर्षक रचनाएँ पूर्णतया वीर काव्य में नहीं आतीं किन्तु इनमें भी ओज, पौरुष, वीरता का आह्वान, संघर्ष के प्रति उत्साह, युद्ध की महत्ता आदि की सशक्त झलक मिलती है. अतः इन्हें भी वीर रस की कविताओं की कोटि से पूर्णतया बहिष्कृत नहीं किया जा सकता. अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि " परशु-राम की प्रतीक्षा " शीर्षक संग्रह सशक्त वीर काव्य का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है ।

झण्डा ऊँचा रहे हमारा (श्यामलाल गुप्त पार्षद)

झण्डा गायन के अमर रचयिता श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद " का यह संग्रह वीरता एवं स्वातंत्र्य संग्राम का आलोक पुंज है. इनकी रचनाओं को पूर्णरूपेण अबतक मूल्यांकित नहीं किया गया है. इसका कारण इनका लघुकाय होना है. कलेवर की दृष्टि से लघु होने पर भी इनका गुणात्मक महत्व है. भूत के अंधकार में खो जाने से पूर्व ही उन्होंने वर्तमान का उजाला इन रचनाओं में भरा है. राष्ट्रीय प्रेम का जो उदाहरण ये रचनाएँ प्रस्तुत करती हैं उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह तेजस्वी एवं प्रति कवि साधना के क्षेत्र में पूर्ण लगन के साथ अपनी कलम चलाता रहा है.

इसकी सभी कविताओं की मूल चेतना वीरत्व से परिपूर्ण राष्ट्र प्रेम है. इस संग्रह में कवि की 23 कविताएँ संग्रहीत है यद्यपि इनका प्रकाशन सन् 1972 में हुआ है परन्तु ये सब 1920 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्तिकाल तक की रचनाएँ हैं. आक्रोश, ललाई, उत्साह, बलिदान,

साहस एवं स्वातंत्र्य चेतना से परिपूर्ण लगभग सारी कविताएँ वीरत्व पर केन्द्रित हैं. उनमें " नेहरू के प्रति ", " सार है ", " स्वागत गान ", " झण्डा गीत ", " समान है ", " पंजाब केसरी ", " संकट " एवं " पावक पुंज में " आदि कविताएँ वीरत्व से ओतप्रोत हैं ।

कवि राष्ट्रीय नेताओं की शक्ति के प्रति पूर्ण रूपेण आश्वस्त है और विदेशी राजसत्ता को " मुर्ग " के समान दुर्बल मानता है. उसकी उत्साहपूर्ण वाणी " नेहरू के प्रति " शीर्षक कविता में कितनी सजीवता से अभिव्यक्त हुई है--

" होश में हुए हैं आज भारतीय वीर फिर,
जोशयुक्त रोश,कुछ काम कर डालैगा ।
सिंहनी का एक लाल, कोटिन कपूतन को,
एक ही दहाड़ से पछाड़ मल डालैगा ।।
बन्दनीय जगत जवाहर-सा सेनापति,
देखते ही देखते कमाला कर डालैगा ।
दल डालैगा दासता का दमनीय दुर्ग,
मुर्ग-सी ब्रिटानियाँ हलाल कर डालैगा ।। " 102

इस उत्साह के साथ ही कवि अहिंसा की नीति को लेकर दुःखी भी प्रतीत होता है और चाहता है कि ईंट का जवाब पत्थर से दें. वह इतना उग्र रूप धारण कर लेता है कि हिंसात्मक होने तक से पीछे नहीं हटता, वह कहता है कि यहाँ पर " कंस " बहुत है. " हिरनाकुश " बहुत है. इनके लिए " कृष्ण " एवं " नरसिंह " का अवतार आवश्यक है एवं प्रहलाद बनकर सहनशीलता अनुचित है. " सार है " शीर्षक कविता में कवि की यह भावना स्पष्टतः उभरी है । 103

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के नैनी कारावास से एक वर्ष के बाद लौटने पर उनके स्वागत में कवि ने जो स्वागत गान लिखा था इसमें विद्यार्थी जी के साहस का सजीव वर्णन हुआ है. " लोकापवाद " एवं साम्राज्यवाद के दो पाटों में पिसते हुए अन्याय के विरुद्ध संघर्ष में विद्यार्थी जी का चित्रण इस कविता में सिंह की भाँति किया गया. [104] वीरत्व की भावना किसी का संहार करने में ही लक्षित नहीं होती, बल्कि आत्म बलिदान देने के लिए तैयार रहना भी इसका एक महत्वपूर्ण पक्ष है. राष्ट्र हितार्थ बलिवेदी पर चढ़ जाना भी कम महत्वपूर्ण नहीं है. " झण्डागीत " का यही मूल संदेश है. " देश-धर्म " के लिए बलिदान एक महान पुण्य है और इसी में से राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा संभव है--

- " आओ प्यारे वीरों, देश धर्म पर बलि-बलि जाओ,

× × ×

इसकी शान न जाने पाये चाहे जान भले ही जाये । "[105]

भारत का ध्वज हमेशा ऊँचा रहे इसके लिए कवि हजारों शीश का बलिदान भी कम समझता है. [106] बलिदान के लिए साहस आवश्यक है जब तक डट कर किसी का सामना न किया जाये तब तक वीरत्व उत्पन्न ही नहीं हो सकता. कवि देश के स्वाधीनता संग्राम के मार्ग में आने वाले संकटों की ओर संकेत करता हुआ इस मार्ग की कंटकाकीर्ण स्थिति का परिचय देता है और वीरों को उसके मार्ग पर निश्चित होकर बढ़ने की प्रेरणा देता है. [106] " समान है " में अहिंसात्मक आंदोलन का रूप प्रस्तुत करता हुआ कवि कहता है--

" छर्रों की बौछार उधर से आती होगी
इधर खुशी से खुली हमारी छाती होगी
नौकरशाही उधर शक्ति मदमाती होगी
जय-जयकार पुकार उधर से आती होगी । "[108]

इसमें बलिदान के लिए जो उत्साह की प्रेरणा दी गयी है, उसमें वीरवृत्ति का सुन्दर परिपाक हुआ है. एवं लाला लाजपतराय के माध्यम से "पंजाब केसरी " शीर्षक कविता में सत्याग्रही वीरों के साहस का हृदय-ग्राही वर्णन भी कवि ने किया है. नेतृत्व करने वाले अपने साथियों को जनसेवा का संदेश देते हुए बलि पथ पर चलने को कहते हैं. अंग्रेजी सरकार को " कुचक्री दल " कहकर उसके विरुद्ध " ध्रुव-धरना धरने की बात कहते हैं. उनके मन में एक ही बात बार- बार ध्वनित होती है कि स्वतंत्रता देवी को हिंसा, अहिंसा एवं बलिदान किसी मार्ग से भी प्राप्त करना है. वे अपने प्राणों के अंतिम श्वास तक स्वतंत्रता का दीपक जलाये रखना चाहते हैं. हजारों संकटों का सामना करके भी मातृभूमि की दासता की कड़ियों को टूटते हुए देखना चाहते हैं.[109] ऐसे संकल्पों में भी वीरता की चेतना उद्भाषित है.

" पावक पुंज " में कविता में उत्साह एवं बलिदान की भावना दृष्टिगोचर होती है--

" काटन में जब गोली चली, भ्रम सो एक बालक मारग भूल्यौ ।
गोली लगी गरे आय गरीब के, भूमि गिरयौ तलफ्यौ झुकि भूल्यौ ।
दानव एक दशा लखि सो, तेहि झोंकि दियो न दया हिय हूल्यौ ।
बैलट में परयो सोहैं लला, जनु पावक-पुंज में पंकज फूल्यौ । "[110]

श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद " स्वयं सन् 1919 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक स्वाधीनता संग्राम के सेनानी रहे और 1947 ई० के पश्चात् भी जन सेवामें मृत्यु पर्यन्त अग्रसर रहे. अतः इन स्वतंत्रता एवं वीरवृत्ति की रचनाओं में कवि की अनुभूति की ईमानदारी स्वयं सिद्ध है. सम्बन्धियों से सम्पर्क स्थापित करने पर ज्ञात हुआ कि इस संग्रह की रचनाओं के अतिरिक्त भी उनकी अनेक कविताएँ पुस्तकाकार प्रकाश में आने से रह गयी हैं. प्राप्त सामग्री के आधार पर यह कहा जा

सकता है कि कवि ने अपने उदात्त विचारों को इन सरल और सरस कविताओं में प्रस्तुत किया है जिनमें अनेक ऐतिहासिक संदर्भ भी हैं. कुल मिलाकर राष्ट्र कवि सोहनलाल द्विवेदी का यह कथन अत्यंत समीचीन जान पड़ता है कि " पार्षद जी भी उन्हीं विभूतियों में से हैं जिनका यथार्थ मूल्यांकन एवं समर्थन अभी शेष है। " 111

(ग) इतर रचनाएँ

इन मुक्तक संग्रहों में उन रचनाओं को स्थान दिया गया है जिनमें युद्धवीर, दया, धर्म एवं दान सभी वीर रस की कोटियाँ मिलती हैं. पूर्ववर्ती विवेचन के अनुसार ही संस्कृति धर्मऔर उज्ज्वल अतीत के प्रति गौरव भावना का भी समावेश हुआ है. वियोगी हरि कृत " वीर सतसई " इस कोटि में आ सकती है ।

वीर सतसई

वियोगी हरि द्वारा रचित " वीर सतसई " राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण वीर रस की उत्कृष्ट कृति है. यह सन् 1927 ई0 में प्रकाशित हुई. इसमें वीर रस से परिपूर्ण दोहों का सुंदर संग्रह सुसंपादित रूप में हुआ है. इस संग्रह के प्रकाशन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ब्रज भाषा में आधुनिक विषयों को गंभीरता एवं कुशलता से वर्णित किया जाता है. ब्रजभाषा में श्रृंगार प्रधान रचनायें ही रची जाती थीं परन्तु वियोगी हरि जी ने ब्रज भाषा में वीर भावना की अभिव्यक्ति कर साहित्य में नवीन दिशा का द्वार खोल दिया है. यद्यपि इसके पूर्व भी ब्रजभाषा में वीर रस की अवतारणा हुई परन्तु वियोगी हरि जी ने केवल कुछ शब्दों को दबाकर बोल देने मात्र से युद्ध वर्णन तक ही वीर रस को सीमित नहीं होने दिया है. वीर रस के स्थायी भाव " उत्साह "

के भारतीय नवचेतना में जितने रूप संभव हैं, उन सबको इन्होंने अपनी इस रचना में समेट लिया है. वास्तव में वियोगी हरि जी कृष्ण भक्त हैं इस कारण वीर सतसई के प्रारंभ में भी कृष्ण की वंदना करते हैं, परन्तु यहाँ कृष्ण गोपी कान्त न होकर वीर वेश में अवतरित हुए हैं. भारतीय संस्कारों को जीवन देने वाले समस्त पौराणिक एवं ऐतिहासिक वीरों की गौरव गाथा का गान इन्होंने किया है और इस प्रकार कवि ने समस्त इतिहास के वीर पक्ष का मंथन कर उसे साकार कर दिया है ।

वियोगी हरि " वीर सतसई " में प्राचीन वीरों की विरुदावली बखान करते हुए वर्तमान निर्बल जाति के जीवन में साहस का स्फुरण करना चाहते हैं. उन्होंने युद्धवीर, दानवीर, दयावीर आदि वीरों के विविध रूपों की चर्चा की हैं. महाभारत काल के जगमगाते हुए वीर रत्नों का आदर्श प्रस्तुत करते हुए वियोगी जी लिखते हैं --

" धन्य भीम रणधीर तू, धरि अरि छाती पाव ।
भरि अंजुरिनि शोणितु पियौ, इन मूंछनि दै ताव ।।
धन्य कर्ण ! रिपु रक्त लों, दियो पूरि रण-कुण्ड ।
करि कंदुक अति चाव सों, उछरि उछारे मुण्ड ।। " [112]

कवि के शोणित से लथपथ हुई बुंदेलखण्ड की भूमि में घटित होने वाली अनेक घटनाओं को दुहराया है. वीरोचित उक्तियाँ तथा उत्साहपूर्ण जीवनादर्श आज भी जाति को उत्तेजित करने की सामर्थ्य रखते है. [113] वीर नारियाँ यथा - लक्ष्मीबाई, पन्नाधाय की वीरता तथा स्वामीभक्ति प्रति भी कवि ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है. इसके अतिरिक्त कवि ने वीर बाहु, वीर नेत्र, वीरता और कामान्धता, वीरता और विलासिता, वीरता का अभाव, वीर गति, वीर सपूत एवं बलिदान का वर्णन किया है. इसमें केवल वीर पुरुषों का ही गुणगान नहीं हुआ अपितु युद्ध का मूर्तरूप भी उपस्थित किया गया है--

" चली चमाचम कोप सौं, चकचौंधिनि तलवार ।
पटी लोथ पै लोथ त्यौं, बही रक्त नद धार ।। " [114]

कवि ने महात्मा गांधी का चित्रण एक सहिष्णु बलिदानी वीर के रूप में किया है ।

" नहिं विचल्यौ सतपंथ तें, सहि असत्य दुःख द्वन्द्व ।
कलि में गांधी रूप है, पुनि प्रकट्यौ हरिचंद ।। " [116]

इन सब विषयों के अतिरिक्त देश की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण भी किया गया है और देश के नवयुवकों एवं समाज के सभी वर्गों को देशोद्धार के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा दी गयी है. वास्तव में वीर सतसई में वीर रस की अजस्त्रधारा प्रवाहित हुई है ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आलोच्य काल खण्ड में विरचित मुक्तक संग्रहों में लगभग 140 मुक्तक रचनायें हैं. ये संपूर्ण रचनायें सांस्कृतिक पुनर्जागरण, समसामायिक राष्ट्रीय चेतना, बलिदान एवं क्रांतिकारियों के प्रयत्नों से जुड़ी हुई है जिसमें कवि ने अनेक प्रकार के रंगों के माध्यम से वीरत्व, उत्साह, बलिदान एवं देश प्रेम की भावना को प्रतिष्ठित किया है. यह चेतना मुख्यतः राष्ट्रीयता से जुड़ी हुई है ।

विषयवस्तु के दृष्टिकोण से यदि विचार किया जाये तो वीर रस की ये रचनायें महापुरूषों, राष्ट्रीय नेताओं या प्रसिद्ध स्थानों को लेकर रची गयी हैं. भीम, दुर्गा, लक्ष्मीबाई, प्रताप, कृष्ण आदि ऐतिहासिक महापुरूषों एवं नारियों के माध्यम से आज की स्वातंत्र्य चेतना को प्रेरित करने का सफलीभूत प्रयास किया है तो दूसरी ओर गांधी, नेहरू, तिलक, लाला लाजपतराय जैसे समसामायिक राष्ट्रीय नेता, जो स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष भाग लेते रहे हैं, ने भी स्वातंत्र्य चेतना को प्रेरित किया है. समकालीन स्थानों की घटनाओं डौंडियाखेरा, हल्दीघाटी, अयोध्या, जलियांवाला बाग, पाटलीपुत्र, मगध आदि

के माध्यम से भी प्रेरणा ग्रहण कर स्वतंत्रता की चेतना को जगाया है ।

तीसरी विशेषता वैचारिक चिन्तन की है और यह चिन्तन भी प्रधानतः दो रूपों में दृष्टिगोचर होता है. पहला सन् 1920 से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले तक एवं द्वितीय सन् 1947 से लेकर 1965 तक. अर्थात्, स्वतंत्रता के बाद भी है । प्रथम कोटि की रचनाओं में वीर रस सत्याग्रहियों के बलिदान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं क्रान्तिकारियों के संघर्षों से प्रेरणा पाकर लिखी गयी हैं तो द्वितीय प्रकार की विदेशी आक्रमणों चीन और पाकिस्तान के युद्ध में देश की रक्षा के लिए संघर्षरत भारतीय वीरों को लेकर हैं और यहाँ भी सांस्कृतिक पुनर्जागरण की चेतना भी साथ- साथ कार्य करती रही है ।

प्रकृति के परिवेश से लेकर स्वतंत्रता के लिए छटपटाती जनता के उच्छवास का आकलन करने वाले कवि भी उस विवेच्य काल में आये हैं. सुभद्राकुमारी चौहान, नवीन, मलखान सिंह सिसौदिया, माखनलाल चतुर्वेदी, श्री श्यामलाल गुप्त " पार्षद " जी जैसे कवि स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं भाग लेते रहे हैं, एवं कारावास के कष्टों को सहते रहे हैं. सत्याग्रहियों के बलिदान, उत्साह, वीरत्व, समकालीन घटनाओं का वर्णन इनमें सशक्त रूप में दृष्टिगोचर होता है जब कि अन्य कवि सोहनलाल द्विवेदी, दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त , प्रसाद आदि कवि भी है जो प्रत्यक्ष रूप में भाग न लेकर उन घटनाओं से प्रेरणा ग्रहण कर लिखते रहे हैं. इनमें से दिनकर, गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, पार्षदजी स्वतंत्रता के पूर्व से सम्बद्ध रहे हैं. इन कवियों ने विभिन्न विषयों पर रचित इन कविताओं में समसामायिक घटनाओं, परिस्थितियों या राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना से सम्बद्ध वीर भावना को जगाने का उपक्रम है. मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, सुभद्रा जी की भाँति माखनलाल जी ने इस चेतना की अभिव्यक्ति के लिए पौराणिक या ऐतिहासिक कथानकों

का सहारा नहीं लिया है ।

प्रस्तुत अनुशीलन के संदर्भ में लेखिका का विनम्र मंतव्य है कि आधुनिक युग में जो लगभग 140 मुक्तक रचनायें आती हैं उनमें मैथिलीशरण गुप्त, निराला, मलखान सिंह सिसौदिया, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सोहनलाल द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह, वियोगी हरि, शिवमंगलसिंह सुमन, जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द जैसे कृतिकारों को काव्यों में स्थान दिया गया है, यह अनुशीलन इस तथ्य को प्रकाशित करता है कि आधुनिक काव्य धारा में इन मुक्तकों का अस्तित्व हिन्दी वीर काव्य परम्परा को एक सशक्त एवं महत्वपूर्ण काव्यधारा के रूप में स्थापित करता है ।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1 ॥ पारिभाषिक शब्दावली ॥ द्वितीय संस्करण, 2080 , पृष्ठ, 650.
2. बिहारी का नया मूल्यांकन : डॉ० बच्चन सिंह, द्वितीय संस्करण 1972. पृ. 114.
3. रेणुका, पृ. 25.
4. वही, पृ. 19.
5. वही, पृ. 78.
6. निराला : अनामिका, पृ. 58.
7. कुँवरचन्द्र प्रकाश सिंह- शम्पा, पृ. 11.
8. वही, पृ. 79.
9. वही, पृ. 74.
10. वही, पृ. 71.
11. वही, पृ. 71.
12. वही, पृ. 72.
13. वही, पृ. 75.
14. दिनकर, इतिहास के आँसू, पृ. 17-18.
15. वही, पृ. 19.
16. वही, पृ. 28 ॥ प्रथम संस्करण 1951 ॥.
17. वही, पृ. 48.
18. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह, प्रतिपदा, निवेदन, पृ. क.
19. वही, प्रतिपदा, पृ. 13-14.
20. वही, पृ. 29.
21. सुभद्राकुमारी चौहान, मुकुल, पृ. 74-75.
22. वही, पृ. 81.

23. मुकुल, पृ. 93-94.
24. वही, पृ. 109.
25. वही, पृ. 77.
26. दिनकर : हुंकार, आमुख.
27. हुंकार, पृ. 10.
28. वही, पृ. 13.
29. वही, पृ. 14.
30. वही, पृ. 19.
31. वही, पृ. 21.
32. वही, पृ. 23.
33. वही, पृ. 73-74.
34. बालकृष्ण शर्मा " नवीन ", कुंकुम, प्रथम संस्करण 1936. कुछ बातें, पृ. 1.
35. वही, पृ. 10.
36. कुंकुम, पृ. 81.
37. वही, पृ. 1-2
38. सोहनलाल द्विवेदी : भैरवी : निवेदन.
39. सोहनलाल द्विवेदी : अभिनन्दन ग्रंथ : एक कवि एक देश, 14 सितम्बर 1969 - रामभूर्ति त्रिपाठी, पृ. 252.
40. भैरवी, पृ. 28-29.
41. वही, पृ. 66.
42. वही, पृ. 35.
43. वही, पृ. 87.
44. वही, पृ. 113.
45. सोहनलाल द्विवेदी, पूजागीत, पृ. 54.
46. वही, पृ. 78.

47. पूजागीत, पृ. 28.
48. माखनलाल चतुर्वेदी : हिमकिरीटिनी : आत्म निवेदन.
49. हिमकिरीटिनी, पृ. 28.
50. वही, पृ. 30.
51. वही, पृ. 117.
52. वही, पृ. 58.
53. वही, पृ. 113.
54. माखनलाल चतुर्वेदी : कैदी और कोकिला, पृ. 57.
55. वही, आत्म निवेदन, पृ. 7.
56. सोहनलाल द्विवेदी , प्रभाती, पृ. 30-31.
57. वही, पृ. 9.
58. वही, पृ. 13.
59. वही, पृ. 17.
60 वही, पृ. 49.
61. वही, पृ. निवेदन.
62. मानबहादुर सिंह सिसौदिया, बंगाल के प्रति और अन्य कविताएँ, पृ. 14.
63. वही, पृ. 15.
64. वही, पृ. 11.
65. वही. पृ. 18.
66. दिनकर : सामधेनी , पृ. 6.
67. वही, पृ. 11.
68. वही, पृ. 15.
69. वही, पृ. 35.
70. वही, पृ. 40.
71. वही, पृ. निवेदन.

72. सामधेनी, पृ. 56-57.
73. वही, पृ. 77.
74. वही, पृ. 64.
75. जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद : बलिपथ के गीत, प्रथम संस्करण- 1950 प्रारम्भिक, पृ. 4.
76. बलिपथ के गीत, पृ. 78-79.
77. माखनलाल चतुर्वेदी , माता, भूमिका, पृ. 5.
78. वही, पृ. 6.
79. वही, पृ. 47.
80. वही, पृ. 53.
81. वही, पृ. 54.
82. वही, पृ. 89.
83. सोहनलाल द्विवेदी, चेतना, पृ. 17-18.
84. वही, पृ. 20.
85. वही, पृ. 22.
86. वही, 56-57, 28.
87. शिवमंगल सिंह " सुमन " विश्वास बढ़ता ही गया, पृ. 11.
88. वही, पृ. 16.
89. वही, पृ. 18-19.
90. वही, पृ. 5.
91. वही, पृ. 38.
92. वही, पृ. 45.
93. वही, पृ. 29.
94. माखनलाल चतुर्वेदी, समर्पण, पृ. 8.
95. वही, पृ. 7 एवं 53.
96. वही, पृ. 79.
97. वही, पृ. 6.

98. माखनलाल चतुर्वेदी, युग चरण, पृ. 55.

99. वही, पृ. 29.

100. वही, पृ. 49.

101. वही, पृ. 63.

102. श्यामलाल गुप्त " पार्षद " , झण्डा ऊँचा रहे हमारा, पृ.30.

103. वही, पृ. 71.

104. वही, पृ. 19.

105. वही, पृ. 10.

106. वही, पृ. 11.

107. वही, पृ. 13.

108. वही, पृ. 16.

109. वही, पृ. 22.

110. वही, पृ. 39.

111. वही संपादकीय, पृ. 5.

112. वियोगी हरि : वीर सतसई , पाँचवा संस्करण- संवत 2001, पृ. 9.

113. वही, पृ. 33, 34, 35.

114. वही, पृ. 28.

115. वही, पृ. 60.